RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 199
दि. 20.11.2025,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nakaram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

राहुल गांधी पर पूर्व अधिकारियों का मोर्चा: 272 दिग्गजों ने खुला खत लिखकर चुनाव आयोग पर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की संवैधानिक संस्थाओं को लेकर छिड़ी बहस अचानक उस समय गरम हो गई जब 272 पूर्व जजों, वरिष्ठ नौकरशाहों और सैन्य अधिकारियों ने एक संयुक्त खुला पत्र जारी करते हुए कांग्रेस और विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखी टिप्पणी की। यह पत्र किसी साधारण प्रतिक्रिया का हिस्सा नहीं, बल्कि उन लोगों की सामूहिक चिंता की अभिव्यक्ति माना जा रहा है, जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा संवैधानिक, प्रशासनिक और सैन्य जिम्मेदारियों के पालन में लगाया है।

इस खुले पत्र पर 16 पूर्व जज, 123 रिटायर्ड ब्यूरोक्रेट—जिनमें 14 पूर्व राजदूत भी शामिल हैं—और 133 पूर्व सैन्य अधिकारियों ने हस्ताक्षर किए हैं। इन हस्ताक्षरकर्ताओं ने एक ही स्वर में आरोप लगाया कि कांग्रेस और उसके शीर्ष नेता चुनाव आयोग पर 'वोट चोरी' जैसे गंभीर आरोप लगाकर देश की लोकतांत्रिक संरचना और विश्व की सबसे बड़ी निर्वाचन प्रणाली की विश्वसनीयता को कमजोर कर रहे हैं।

पत्र में सबसे अधिक तीखी आपत्ति राहुल गांधी की हालिया प्रेस कॉन्फ्रेंसों को लेकर जताई गई है, जिनमें उन्होंने चुनाव आयोग पर "भाजपा की B टीम" होने का आरोप लगाया। पत्र में लिखा है कि यदि इतने बड़े आरोप लगाए जा रहे हैं तो इसके लिए प्रमाण भी सार्वजनिक किए जाने चाहिए थे। लेकिन न तो कोई आधिकारिक शिकायत की गई और न ही कोई ठोस दस्तावेज या हलफनामा सामने रखा गया। इसे पत्र के हस्ताक्षरकर्ताओं ने "राजनीतिक असंतोष को हवा देने का प्रयास" और "बिना आधार का प्रचार" बताया।

इन पूर्व जजों और अधिकारियों का मानना है कि देश में यह एक खतरनाक प्रवृत्ति बढ़ रही है कि किसी भी चुनावी हार का ठीकरा संस्थाओं पर फोड़ दिया जाता है। उन्होंने कहा कि जब विपक्षी दल जीतते हैं, तब आयोग पर पूर्ण विश्वास जताया जाता है, लेकिन जैसे ही पराजय का सामना करना पड़ता है, चुनाव आयोग पर प्रहार शुरू हो जाते हैं। इसे उन्होंने दोहरे मापदंड और राजनीतिक अवसरवाद की मिसाल बताया।

पत्र में यह भी कहा गया कि पिछले कुछ समय से सेना, न्यायपालिका और संसद जैसी संस्थाओं पर भी सवाल उठाने की परंपरा बढ़ी है, और अब चुनाव आयोग को निशाना बनाया जा रहा है। यह सिलसिला लोकतंत्र के लिए किसी भी रूप में स्वस्थ नहीं माना जा सकता। हस्ताक्षरकर्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि यह माहौल जारी रहा तो जनता के मन में लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अविश्वास गहराता जाएगा, जिसका भविष्य में दूरगामी और नुकसानदेह प्रभाव जरूरी तौर पर दिखाई देगा।

रिटायर्ड अधिकारियों ने साफ कहा कि फर्जी वोटरों, गैर-नागरिकों और अवैध प्रवासियों को मतदाता सूची से हटाना न सिर्फ चुनाव आयोग का अधिकार है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा और लोकतंत्र की रक्षा के लिए भी अनिवार्य कदम है। उन्होंने टीएन शेषन और एन. गोपालस्वामी जैसे पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्तों के योगदान को याद करते हुए कहा कि आयोग हमेशा से मजबूत, निष्पक्ष और स्वायत्त संस्था रही है।

पत्र के अंत में हस्ताक्षरकर्ताओं ने विपक्ष से अपील की है कि राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हो सकते हैं, लेकिन जनता के भरोसे पर खड़ी संस्थाओं को कटघरे में खड़ा करना किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र बहस और आलोचना से चलता है, लेकिन यह आलोचना तथ्यों, प्रमाणों और जिम्मेदारी के साथ होनी चाहिए—न कि राजनीतिक रणनीति के तौर पर संस्थाओं को बदनाम करके।

देश की राजनीतिक धारा में यह खुला पत्र अब एक नया विमर्श लेकर आया है। सवाल केवल आरोप-प्रत्यारोप का नहीं, बल्कि उन संस्थाओं की विश्वसनीयता का है जिनके बूते भारत की लोकतांत्रिक नींव खड़ी है। यह देखना अब रोचक होगा कि इस पत्र के बाद राजनीतिक प्रतिक्रिया किस दिशा में बढ़ती है और क्या यह मुद्दा संसद व सार्वजनिक चर्चा का बड़ा विषय बनता है या विरोध और सत्ता—दोनों अपनी-अपनी रफ्तार से आगे बढ़ते रहते हैं।

व्हाइट हाउस में नई वैश्विक धुरी का उदय: सऊदी अरब को एफ-35, परमाणु तकनीक और मेगा निवेश पर ऐतिहासिक सहमति के संकेत

(जीएनएस)। वॉशिंगटन की शाम कुछ अलग ही चमक लिए हुए थी। व्हाइट हाउस के प्रांगण में लाल कालीन बिछा था, अमेरिकी नेवी बैंड अपने पारंपरिक सुरों में स्वागत धुन बजा रहा था और आसमान में अमेरिकी जेट्स की गूँज एक बड़े कूटनीतिक क्षण का संकेत दे रही थी। सात साल बाद जब सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान व्हाइट हाउस पहुंचे, तो यह केवल एक औपचारिक मुलाक़ात नहीं थी—यह अंतरराष्ट्रीय राजनीति के नए अध्याय की शुरुआत थी।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ घंटों चली गहन बातचीत ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि दुनिया की शक्ति–संतुलन रेखाएं बदल रही हैं और अमेरिका–सऊदी गठबंधन फिर एक नए, बड़े रूप में उभर रहा है।

बैठक की सबसे बड़ी घोषणा उस क्षण हुई जब ट्रंप ने कहा कि अमेरिका सऊदी अरब को अत्याधुनिक एफ-35 स्टेल्थ फाइटर जेट देने की तैयारी कर रहा है। यह वही विमान है जो दुनिया के सबसे उन्नत और लगभग अदृश्य युद्धक विमानों में गिना जाता है और जिसे अमेरिका अब तक केवल चुनिंदा देशों को ही देता रहा है। इस घोषणा के साथ ही मध्य-पूर्व की राजनीति में एक गहरी तरंग दौड़ गई—इजरायल की सुरक्षा रणनीति, ईरान का हथियार कार्यक्रम और अरब देशों का सामरिक संतुलन—सब कुछ एक नई दिशा की ओर झुकने लगा।

एफ-35 के सौदे के साथ-साथ एक और बड़ा संकेत सामने आया। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका सऊदी अरब को परमाणु तकनीक उपलब्ध कराने वाले संभावित समझौते पर विचार कर रहा है। यह ऐसी तकनीक है जिसे अमेरिका सामान्यतः बेहद कड़ी सुरक्षा और सावधानी के साथ साझा करता है। ट्रंप ने किसी समय सीमा की घोषणा तो नहीं की, लेकिन यह जरूर कहा कि निकट भविष्य में "एक सौदा संभव" है। इस घोषणा का मतलब है कि अमेरिका सऊदी को केवल हथियार नहीं दे रहा, बल्कि उसे ऊर्जा और सामरिक तकनीक में भी एक बड़े खिलाड़ी के रूप में उभरने में मदद करने जा रहा है।

बैठक में अब्राहम समझौतों की दिशा में भी नई उम्मीदें जगाईं। ट्रंप ने दावा किया कि सऊदी से सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं, जबकि बिन सलमान ने दो-टूक कहा कि फिलिस्तीन के लिए दो-राज्य समाधान पर स्पष्ट रोडमैप जरूरी है। इस तरह यह मुलाक़ात न केवल दो देशों के बीच, बल्कि पूरे मध्य-पूर्व के बीच एक नई शांति–संभावना की भी ओर इशारा कर रही है।

व्हाइट हाउस के भीतर हुई इस बैठक का एक बड़ा हिस्सा तकनीकी सहयोग पर केंद्रित रहा। अमेरिका ने संकेत दिया कि वह सऊदी अरब को हाई-एंड एआई चिप्स के निर्यात को मंजूरी दे सकता है। ऐसे चिप्स वही हैं जिन्हें चीन को देने पर अमेरिका सख्त रोक लगाता है। इस कदम से यह साफ हो गया कि सऊदी न केवल अमेरिका का सामरिक साझेदार, बल्कि तकनीकी साझेदारी का भी मुख्य स्तंभ बन रहा है। सऊदी का महत्व अब तेल के युग से निकलकर एआई और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की दुनिया में प्रवेश कर चुका है। बैठक में आर्थिक मोर्चे पर भी एक ऐतिहासिक घोषणा हुई। ट्रंप ने बताया कि सऊदी अरब अमेरिकी अर्थव्यवस्था में 600 अरब डॉलर निवेश करने के लिए तैयार है। उन्होंने मज़ाक में कहा कि यह रक़म 1 ट्रिलियन डॉलर तक भी जा सकती है। बिन सलमान ने तुरंत कहा कि "यही योजना है।" यह बयान केवल एक मजाकिया संवाद नहीं था—यह भारत, चीन और यूरोप तक को संकेत था कि अमेरिका और सऊदी की आर्थिक साझेदारी आने वाले दशक में वैश्विक निवेश मानचित्र को बदल सकती है।

पख्तूनख्वा की घाटियों में तीन दिनों तक गूँजती गोलियों की आवाज़ और अंत में 38 उग्रवादियों का सफाया

(जीएनएस)। खैबर पख्तूनख्वा की पहाड़ियों के ऊपर नवंबर की हल्की सर्द हवा बह रही थी। घाटियों के बीच बसे छोटे-छोटे गांवों में रोज़मर्रा की ज़िंदगी चल रही थी, लेकिन सुरक्षा एजेंसियों के गुप्त दफ्तरों में माहौल बिल्कुल अलग था। कई हफ्तों से इकट्ठी की गई खुफिया जानकारी एक बड़े अभियान की ओर इशारा कर रही थी, और अब वक्त आ चुका था कि पाकिस्तान अपनी सबसे खतरनाक आतंकी चुनौती, टीटीपी, के खिलाफ निर्णायक वार करे। 15 नवंबर की सुबह डेरा इस्माइल खान के कुलाची क्षेत्र में हलचल तेज़ हो गई। खुफिया रिपोर्टों ने साफ बता दिया था कि टीटीपी का एक बड़ा समूह यहाँ डेरा जमाए बैठा है। इससे पहले कि आतंकवादी कुछ समझ पाते, सुरक्षा बलों ने चारों ओर से घेरा कस दिया। घंटों चली मुठभेड़ के बाद धूल से भरी उस घाटी में 10 उग्रवादियों के शव बिखरे पड़े थे। इनमें संगठन का कुख्यात वित्तीय संचालक आलम महसूद भी शामिल था, जिसका नाम पूरी एजेंसियों की वॉचलिस्ट में लंबे समय से दर्ज था।

अगले ही दिन अभियान का दूसरा अध्याय उत्तरी वजीरिस्तान के दत्ता खेल इलाके में शुरू हुआ। यह इलाका हमेशा से आतंकियों का मजबूत अड्डा माना जाता रहा है। पहाड़ियों के बीच बने छोटे-छोटे ठिकानों में छिपे उग्रवादी अचानक सैनिकों की ताबड़तोड़ कार्रवाई में घिर गए। तेज़ गोलाबारी ने इलाके की खामोशी तोड़ दी और कुछ ही समय में पाँच उग्रवादी ढेर हो चुके थे। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होने वाली थी। 16 और 17 नवंबर को सुरक्षा बलों ने अपना अभियान और तेज कर दिया। इस बार निशाना था बाजौर और बन्नू—टीटीपी की दो महत्वपूर्ण रीढ़ें। बाजौर में जैसे ही सैनिकों ने जाल बिछाया, आतंकियों की तरफ से जबरदस्त प्रतिरोध शुरू हुआ, लेकिन अंत में 11 उग्रवादी मार गिराए गए। इसी दौरान एक नाम सबका ध्यान खींच रहा था—टीटीपी कमांडर सज्जाद उर्फ अबुजर—जिसे संगठन का सबसे चालाक और प्रभावशाली चेहरा माना जाता था। वह भी इसी मुठभेड़ में ढेर हो गया, जिससे सुरक्षा बलों का मनोबल और बढ़ा। बन्नू की धरती पर अगली सुबह फिर गूँज उठी गोलियों की आवाज़ और परिणाम सामने था—12 और उग्रवादी, जो लंबे समय से घाटियों में खौफ का माहौल फैला रहे थे, हमेशा के लिए खत्म। तीन दिनों के भीतर कुल 38 आतंकवादी बेमौत मारे जा चुके थे। पाकिस्तान की सेना का जनसंपर्क विभाग (आईएसपीआर) इस सफलता को वर्षों में चली आतंक-रोधी रणनीति की बड़ी उपलब्धि बता रहा था।

इस पूरे अभियान की खबर इस्लामाबाद पहुँची तो राष्ट्रपति आसिफ अली ज़रदारी और प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ दोनों ने सुरक्षा बलों को बधाई देते हुए इसे "निर्णायक प्रहार" कहा। प्रधानमंत्री ने 'आज्म-ए-इस्तेहकाम' अभियान को देश में सुरक्षा की नई गारंटी बताया और कहा कि यह सिर्फ शुरुआत है, आगे और भी बड़े कदम उठाए जाएंगे।

दिलचस्प बात यह है कि इससे ठीक पहले वाले हफ्ते में भी खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में तीन जगहों पर अभियानों में 24 उग्रवादी खत्म किए गए थे। इससे यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान अब आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई को नए तेवर, नई गति और नए संकल्प के साथ आगे बढ़ा रहा है। पहाड़ियों में बहती हवा भले ही वही हो, लेकिन अब उसकी गूंज में एक संदेश साफ सुनाई देता है—इस बार सरकार और सुरक्षा बल पीछे हटने वाले नहीं।

खूनी मायावी सफ़र का अंत : एक करोड़ का इनामी नक्सली थिप्पिरी तिरुपति मुठभेड़ में ढहा, बस्तर में 131 जवानों की हत्या का खून सुकून पाता दिखा

(जीएनएस)। रामपचोदवरम के घने जंगलों में आज सुबह की हवा असामान्य रूप से भारी थी। पूर्वी घाट की ढलानों पर धीरे-धीरे उतरती धुंध के बीच सुरक्षा बलों की एक विशेष टीम बिना किसी शोर के आगे बढ़ रही थी। उन्हें खबर मिली थी कि लंबे समय से फरार और एक करोड़ रुपये के इनाम वाला सबसे खूंखार नक्सली थिप्पिरी तिरुपति उर्फ देवजी इसी इलाके में अपनी टीम के साथ छिपा हुआ है। कई सालों से पुलिस और खुफिया एजेंसियों को छकाता हुआ यह मोस्ट वांटेड माओवादी आज आख़िरकार सुरक्षा बलों के निशाने पर आने वाला था—लेकिन कोई नहीं जानता था कि आने वाला एक घंटा नक्सल विरोधी अभियान के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ बन जाएगा।

जैसे ही सुबह की पहली रोशनी पेड़ों की शाखाओं से रिसती हुई नीचे उतरी, जंगल के भीतर अचानक गोलियों की गूँज फैल गई। माओवादी दस्ते ने सुरक्षा बलों को देखते ही अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी, और जवाब में बलों ने मोर्चा संभालते हुए तेजी से घेराबंदी की। करीब चालीस मिनट तक चली भीषण गोलीबारी में कई माओवादी गिरते चले गए, लेकिन सुरक्षा बलों की नज़र सिर्फ एक चेहरे पर थी—वह चेहरा जिसने बस्तर के लोगों और जवानों के दिलों में वर्षों तक आतंक फैला रखा था।

जब मुकाबला थमा, तब जंगल की खामोशी में एक भारी शरीर ज़मीन पर पड़ा दिखा। उसकी दाढ़ी में मिट्टी भरी थी, हाथ में बंदूक अब भी कसकर पकड़ी हुई थी, और माथे पर वह निशान था जिसने खुफिया रिकॉर्ड्स में उसे पहचाननीय बना दिया था। एडीजी (इंटेलिजेंस) महेश चंद्र लड्डा ने कुछ ही मिनटों बाद पुष्टि की—"मारा गया है थिप्पिरी तिरुपति उर्फ देवजी।"

यही वह नाम था जिसने बस्तर में 131 से ज्यादा सुरक्षाकर्मियों की हत्या करवा कर नक्सली संगठन के भीतर अपना रुतबा स्थापित किया था। यही वह रणनीतिकार था जो वर्षों तक ओडिशा–आंध्र प्रदेश–छत्तीसगढ़ की सीमाओं पर सुरक्षा बलों के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बना रहा। और यही वह नेता था जिसे नक्सल संगठन ने महासचिव की कुर्सी तक पहुंचाया था।

सरकार ने उसकी गिरफ्तारी या मौत पर एक करोड़ रुपये से ज्यादा का इनाम घोषित किया था—क्योंकि वह सिर्फ एक नक्सली कमांडर नहीं, बल्कि जंगलों के भीतर चलता-फिरता छाया-सा आतंक था। वह घात लगाकर हमले करने में माहिर, बारूदी सुरंगें बिछाने में दक्ष और सुरक्षा बलों की गतिविधियों का गहरा विश्लेषक माना जाता था। उसकी योजनाओं के चलते बस्तर की पहाड़ियों में कई जवान अपनी जान गंवा चुके थे। आज उसकी मौत की खबर जैसे ही फैली, सुरक्षा प्रतिष्ठान में इसे एक "बड़ी राहत" के रूप में देखा गया।

मुठभेड़ में कुल छह से सात माओवादी मारे गए, लेकिन तिरुपति की मौत सबसे भारी पड़ी। पिछले कई महीनों से उसकी गतिविधियों पर एजेंसियों की नज़र थी। खबरें थीं कि वह ओडिशा–आंध्र सीमा पर सक्रिय अपने नेटवर्क को मजबूत करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन लगातार बढ़ते दबाव और तकनीकी निगरानी ने उसकी घूमने की क्षमता को सीमित कर दिया था, और आज उसी जाल में वह पूरी तरह फंस गया। रामपचोदवरम के जंगल अब फिर से शांत हो चुके हैं। लेकिन उस खामोशी में वर्षों का दर्द, जवानों की शहादतें और एक लंबे संघर्ष की परछाइयाँ अभी भी तैर रही हैं। आज एक खूंखार अध्याय का अंत हुआ है—लेकिन यह लड़ाई अभी भी जारी है।

श्वे कोक्को की अँधेरी गलियों में फैला साइबर साम्राज्य ढहा, 346 विदेशियों की गिरफ्तारी से खुली अरबों डॉलर की ठगी की परतें

(जीएनएस)। म्यांमार और थाईलैंड की सीमा के बीच फैला घना जंगल सुबह की धुंध में ढका हुआ था, लेकिन माहौल असामान्य था। श्वे कोक्को—जो कभी शांत और साधारण गाँव हुआ करता था—अब सत्ता, अपराध और धन की ऐसी भूलभुलैया बन चुका था, जिसके भीतर प्रवेश करना आम लोगों के बस की बात नहीं। लंबे समय से यह इलाका साइबर अपराधियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बन चुका था, जहाँ डिजिटल ठगी का साम्राज्य रात-दिन चल रहा था। और इसी साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिए म्यांमार की सेना ने वह कदम उठाया, जिसकी चर्चा अब पूरी दुनिया में हो रही है।

रविवार की सुबह जब सैन्य वाहनों ने श्वे कोक्को की ओर कूच किया, तो किसी को अंदाज़ा नहीं था कि आने वाले घंटों में यहाँ का चेहरा बदलने वाला है। सेना ने अचानक दर्जनों इमारतों को घेर लिया—इमारतें जिन्हें बाहर से साइबर कैफे, कॉल सेंटर और ऑफिस का नाम दिया जाता था, लेकिन भीतर से ये कुख्यात अंतरराष्ट्रीय ठगी मॉड्यूल थे, जहाँ दुनिया भर के लोगों की डिजिटल किस्मतें लूटी जाती थीं। छापेमारी कुछ ही मिनटों में हाई-टेक उपकरणों, बंद कमरों और सैकड़ों विदेशी युवाओं से भरे अड्डों तक पहुँच गई।

जैसे-जैसे तलाशी आगे बढ़ी, सुरक्षा बलों की आँखें भी चौंधिया गईं। 346 विदेशी नागरिक गिरफ्तार किए गए—वे लोग जो या तो ठगी गिरोहों का हिस्सा थे या बेरोज़गारी और लालच में फँसकर मजबूरन इन अवैध नेटवर्कों में धकेले गए थे। 10,000 से ज्यादा मोबाइल फोन, सैकड़ों कंप्यूटर, फर्जी दस्तावेज़ और अनगिनत चैट स्क्रिप्ट बरामद हुईं, जिनसे खुलासा हुआ कि यहाँ से रोमांस स्कैम, निवेश दोगुना करने के झाँसे, ऑनलाइन जुआ, फर्जी ऐप और शेयर ट्रेडिंग योजनाओं के जरिए हर साल अरबों डॉलर की ठगी की जा रही थी।

कई सालों से श्वे कोक्को का नाम बदनाम था, लेकिन म्यांमार की सैन्य सरकार पर इन गिरोहों को रोकने में ढिलाई के आरोप लगते रहे। विशेषज्ञ कहते हैं कि चीन के बढ़ते दबाव और सीमाई सुरक्षा के मुद्दों ने आखिरकार सेना को कठोर कदम उठाने पर मजबूर किया। पिछले एक महीने में अभियान अचानक तेज हुआ और यह छापेमारी उसी श्रृंखला का सबसे बड़ा पड़ाव साबित हुई।

धीरे-धीरे दुनिया भर का ध्यान एक नाम पर जाकर टिकता है—शी झिजियांग। चीन और कंबोडिया की सीमाओं पर फैले संगठित अपराध का बड़ा चेहरा, जिसकी 'याताई' नाम की कंपनी के तहत श्वे कोक्को में पूरे ठगी नेटवर्क का संचालन होता था। 2022 में थाईलैंड में पकड़ा गया शी झिजियांग हाल ही में चीन को सौंपा गया है, जहाँ वह ऑनलाइन जुआ, धोखाधड़ी और मानव तस्करी जैसे गंभीर आरोपों का सामना कर रहा है। अमेरिका और ब्रिटेन भी उसे प्रतिबंध सूची में डाल चुके हैं, जिससे उसके साम्राज्य की नींव और हिल चुकी है।लेकिन इस पूरी कहानी का सबसे चौंकाने वाला हिस्सा यह है कि गिरफ्तार किए गए 346 विदेशियों में सबसे बड़ी संख्या भारतीयों की है। कुल 269 भारतीय नागरिक इन साइबर मॉड्यूलों में पाए गए—कुछ फँसाए गए, कुछ लालच में आए, और कुछ संगठित गिरोहों के निर्देशों पर काम कर रहे थे। इनके अलावा 31 लाओस के नागरिक, 16 वियतनामी और एक दक्षिण कोरियाई भी इस अभियान में पकड़े गए। म्यांमार प्रशासन ने हाल ही में कुल 317 विदेशियों को उनके देशों को सौंप दिया है और बाकी की प्रक्रिया जारी है।

श्वे कोक्को की गलियों में अब भी सुबह की धुंध तैर रही है, लेकिन हवा का रंग बदल चुका है। कभी यह इलाका जुआ, ड्रग्स, वेश्यावृत्ति और साइबर ठगी का सबसे बड़ा अड्डा था, जहाँ 600 से भी अधिक अवैध इमारतें अपराध की फैक्टरी की तरह काम करती थीं।

संपादकीय

नाबालिगों के अपराध

हाल ही में, दिल्ली के विजय विहार इलाके में लूट का विरोध करने वाले एक ऑटो चालक की निर्मम हत्या में पांच नाबालिगों की गिरफ्तारी गंभीर चिंता बढ़ाने वाली है। देश में नाबालिगों के बालिगों की तर्ज पर गंभीर अपराधों को अंजाम देने की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। वहीं दिल्ली की घटना में गिरफ्तार किशोरों की स्वीकारोक्ति डराने वाली है कि वे नशे के आदी हैं और पैसे जुटाने के लिये लूटपाट जैसे अपराधों में लिप्त रहते हैं। यह घटना हमारे समाज में पनप रही विकृतियों की ओर इशारा कर रही है। साथ ही यह भी संकेत कि अब वक्त आ गया है कि किशोर अपराधों पर अंकुश लगाने के लिये सख्त कानूनों के प्रावधान हों। इसकी वजह यह है कि किशोरों को अपराध करने के बाद सामान्य जेलों में रखने के बजाय बाल सुधार गृहों में भेज दिया जाता है। लेकिन बाल सुधार गृहों में रहने के दौरान भी ऐसे अपराधी किशोरों में बड़ा बदलाव नजर नहीं आता। अक्सर देखा जाता है कि बाल सुधार गृहों में रहने की सीमित अवधि के बाद कई किशोर फिर अपराधों की दुनिया में उतर जाते हैं। समाज विज्ञानियों का मानना है कि किशोर अपराधों को लेकर कानून के अस्पष्ट और लचर होने की वजह से भी दोषियों को दंडित नहीं किया जा सकता। अक्सर कहा जाता है कि नाबालिगों की सजा के मामले में अभियुक्त की उम्र को घटा दिया जाए। दरअसल, बदलते परिवेश में समय से पहले किशोरों में वयस्कों की नकारात्मक प्रवृत्तियां पनपने लगी हैं। जिसके चलते वे बड़ों के जैसे अपराध तो करते हैं। लेकिन उन्हें उस अनुपात में सजा नहीं दी जा सकती। वैसे यह भी हकीकत है कि किशोरों के सामने लंबा भविष्य होता है। यदि परिस्थितिवश या मजबूरी में वे कोई अपराध करते हैं तो उन्हें सुधरने का मौका दिया जाना चाहिए। वैसे भी दंड का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति में सुधार ही होता है।

दरअसल, इस तथ्य पर भी विचार करने की जरूरत है कि यदि किशोर सजा काटने के बाद भी लगातार अपराध की दुनिया में सक्रिय रहते हैं तो उसके लिये दंड के सख्त प्रावधान होने चाहिए। वहीं, अपराध के मूल में आर्थिक विषमताएं भी हैं, जिसके चलते वे पढ़-लिख नहीं पाते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में तमाम सामाजिक विद्रूपताएं भी किशोर मन में नकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। जैसेकि दिल्ली की घटना में लिप्त किशोरों ने स्वीकारा कि वे नशे के आदी हैं, यह घटना हमारे समाज में नशे के नासूर से उपजे संकट की ओर इशारा करती है। ऐसे में नशे पर अंकुश के साथ ही उन सामाजिक विसंगतियों पर नजर रखने की जरूरत है जो किशोर मन के भटकाव को जन्म देती हैं। दूसरा संकट भारतीय समाज में जीवन मूल्यों का तेजी से होता पराभव भी है। किशोरों को नैतिक शिक्षा का पाठ सही ढंग से न स्कूलों में मिल पा रहा है और न ही घरों में। इस संकट का एक बड़ा पहलू इंटरनेट पर जहरीली व अश्लील सामग्री की प्रचुरता भी है। अक्सर किशोरों व वयस्कों के अपराधों के कारण जानने पर पता चला कि उन्होंने इंटरनेट पर अश्लील सामग्री देखने के बाद यौन हिंसा को अंजाम दिया। ऐसे में बच्चों को संस्कार स्कूल और घर के बजाय मोबाइल से मिल रहे हैं। इंटरनेट पर प्रसारित आपत्तिजनक सामग्री को कौन और किस उद्देश्य से डाल रहा है, कहना कठिन है। लेकिन इतना तय है कि सोशल मीडिया व इंटरनेट से जुड़े विभिन्न माध्यमों में परोसी जा रही विषैली सामग्री बाल मन पर बुरा असर डाल रही है। ऐसे में नशा, अश्लीलता और अपराध उन्मुख कार्यक्रम किशोरों को अपराध की गलियों में गुजरने के लिए उकसा रहे हैं। बहरहाल, अब समय आ गया है कि नीति-नियंताओं को विचार करना चाहिए कि हत्या-बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों में लिप्त किशोरों के लिये कैसे कानून बनें। निश्चय ही कानून का मकसद किसी अपराधी में सुधार ही होना चाहिए। लेकिन इस छूट को सजा से छूट का हथियार बनने देने से भी रोकना चाहिए। अन्यथा किशोरों के अपराधों का सिलसिला बेकाबू हो सकता है।

वंदे मातरम् केवल उद्घोष नहीं दुनिया के शीर्ष 10 गीतों में सर्वाधिक लोकप्रिय दूसरा गीत

> प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों मन की बात में देशवासियों से संवाद कायम करते हुए वंदे मातरम् के 150 वें वर्ष पर आयोजनों की श्रृंखला के माध्यम से आज की पीढ़ी को वंदे मातरम् के इतिहास और प्रेरकता से रुबरु कराने का संदेश दिया है।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने बंगाल के कांतलपाड़ा गांव में जब 7 नवंबर, 1876 में वंदे मातरम् गीत की रचना की तब उनके मानस में शायद ही यह होगा कि यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन में आजादी के दिवानों का प्रेरक होने के साथ ही आजादी के बाद भी देश की राष्ट्रीय एकता और मातृभूमि के प्रति प्रेम और श्रृद्धा का प्रतीक बन जाएगा। वंदे मातरम् में जिस तरह से मॉ भारती की स्तुति की गई है वह हमारी पहचान और गौरवपूर्ण सांस्कृतिक विरासत से रुबरु कराने का माध्यम बन गई। 1870 के भयंकार अकाल और अंग्रेजों द्वारा महारानी की शान में गौड़ सेव क्वीन के लिए बाध्य करने की प्रतिक्रिया के रुप में वंदे मातरम् की आधार भूमि तैयार हुई। कुछ समय बाद ही बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास आनंद मठ में वंदे मातरम् को प्रमुख स्थान दिया गया। आनंद मठ भी गुलामी से मुक्ति और अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना से ओतप्रोत उपन्यास होने से आजादी के आंदोलन ही नहीं आज भी प्रेरणा का स्रोत है। आनंद मठ में भवानन्द संन्यासी संन्यासी विद्रोहियों का नेतृत्व करते हुए यह गीत गाते हैं। वंदे मातरम् गीत की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि गुरुवर रविन्द्र नाथ टैगोर ने 1896 के कांग्रेस के सम्मेलन में इसे अपने स्वर देते हुए स्वयं गाया। उसके बाद तो वंदे मातरम् भारत की आत्मा ही बन गया। स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानियों के लिए तो वंदे मातरम् जयघोष ही बन गया। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध का मार्च गीत ही वंदे मातरम् रहा। हालांकि वंदे मातरम् को लेकर मुस्लिम लीग आदि ने सांप्रदायिकता, धर्म विशेष से प्रेरित और मां दुर्गा को लेकर

विरोध व्यक्त किया गया और यही कारण रहा कि वंदे मातरम् गीत के आरंभिक दो छंदों को ही कांग्रेस द्वारा राष्ट्रगीत के रुप में स्वीकारा गया। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि आजादी के अमृत काल में हम वंदे मातरम् के 150 वें वर्ष को मनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों मन की बात में देशवासियों से संवाद कायम करते हुए वंदे मातरम् के 150 वें वर्ष पर आयोजनों की श्रृंखला के माध्यम से आज की पीढ़ी को वंदे मातरम् के इतिहास और प्रेरकता से रुबरु कराने का संदेश दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि वंदे मातरम् भले ही 19 वीं शताब्दी में लिखा गया था लेकिन इसकी भावना भारत के हजारों वर्ष पुरानी अमर चेतना से जुड़ी थी। वेदों में जिस भाव से माता भूमि पुत्रों अहम् पृथिव्या भाव से जुड़ा है। 1950 में वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रुप में अपनाया गया। 1950 में ही जदुनाथ भट्टाचार्य ने वंदे मातरम् को संगीत दिया। जनगणमन जहां राष्ट्रगान है और औपचारिक आयोजनों में राष्ट्रगान को गाया जाता है और उसके अपने प्रोटोकाल है वहीं राष्ट्रगीत किसी भी राष्ट्रीय अवसर पर गाया जा सकता है।

वंदे मातरम् केवल गीत या उद्घोष ना होकर 140 करोड़ देशवासियों को एकजुट करने, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत करने और सनातन भारतीय संस्कृति से रुबरु कराने का माध्यम है। भारत भूमि की सनातन सांस्कृतिक विरासत से रुबरु कराने का माध्यम है वंदे मातरम्। गुलामी के दौर में वंदे मातरम् राष्ट्रीय भावना, देश प्रेम और स्वतंत्रता आंदोलन का उद्घोष रहा है तो आजादी के बाद यह देशवासियों की आत्मा बन चुका है। बहुत कम को जानकारी होगी कि दुनिया के 7000 इस तरह के गीतों में से दुनिया के अव्वल 10 गानों को चयन किया गया और उनमें से भी हमारा वंदे मातरम् राष्ट्रगीत सबसे लोकप्रिय गीतों में दूसरे स्थान पर है। यह कोई हमारी घोषणा ना होकर 2003 में बीबीसी वर्ल्ड द्वारा कराये गये वैश्विक सर्वे में उभर कर आया है। वंदे मातरम् की लोकप्रियता और सर्वग्राह्यता को इसी से आसानी से समझा जा सकता है। आज भी वंदे मातरम् के उद्घोष मात्र से ही देशवासियों में जिस तरह से हृदय से राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना जागृत होती है उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। भारतीय भूमि के कण कण को प्रकाशित करते इस गीत में भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य, सांस्कृतिक परंपरा और एकता की ड़ोर में पिरोये भारत की अभिव्यक्ति है। यही कारण है कि राष्ट्रीय गीत के एक एक शब्द का अपना सौन्दर्य है और गौरवशाली परंपरा को संजोये हुए हैं। हमें हमारी गौरवशाली परंपरा को संजोये रखने के लिए वंदे मातरम् के एक एक शब्द और उसके भावार्थ को समझना होगा। आजादी के दीवानें जहां वंदे मातरम् के उद्घोष के साथ देश की आजादी के लिए प्राण न्यौछावर कर दिए वहीं अब आज हमें वंदे मातरम् के भावों को समझने, आत्मसात् करने और देशविरोधी ताकतों, सांप्रदायिक तत्वों को निरुत्साहित करते हुए भारत मां के गौरव में चार चांद लगाने के समुचित प्रयास करने होंगे। खासतौर से आज की पीढी को समझने और देशभक्ति से ओतप्रोत होने की इसलिए आवश्यकता है कि आज जिस तरह से वैश्विक संकट का दौर चल रहा है और भारत की उत्तरोत्तर प्रगति से अमेरिका सहित दुनिया के देश पचा नहीं पा रहे हैं उन हालातों में वंदे मातरम् की भावना प्रत्येक भारतवासी में होना जरुरी हो गया है। हमें देश की गरिमा और गौरव को बनाये रखना होगा। वंदे मातरम् 140 करोड़ देशवासियों वासियों को माला के मणियों की तरह राष्ट्रप्रेम और एकता से पिरोये रखेगा।

प्रेरणा

धरती का तपस्वी हजारी

बिहार के एक शांत गांव के किनारे, जहां मिट्टी की खुशबू हवा में घुलकर जीवन को एक अलग ही मिठास देती थी, वहीं रहता था हजारी—एक साधारण किसान, पर दिल में प्रकृति के लिए असाधारण करुणा से भरा हुआ। उसके दिन का आरंभ अक्सर पंछियों की चहचहाहट और खेतों की ओर जाने वाली उसी पगडंडी से होता था, जहां वह रोज गुजरता था। पर धीरे-धीरे उस पगडंडी के आस-पास के पेड़ कटने लगे। कुल्हाड़ी चलती, पत्तों की सरसराहट टूटती, टहनियां जमीन पर गिरतीं—और यह सब हजारी की आंखों के सामने होता रहा। उसे लगता जैसे धरती अपने सबसे पुराने बच्चों से वंचित होती जा रही है।

इस दुख ने एक दिन उसे चौपाल तक पहुंचा दिया। गांव के सब लोग इकट्ठा थे—पुरुष, महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग। हजारी ने बड़ी विनम्रता से कहा,

"अगर हम ऐसे ही पेड़ों को काटते रहे, तो एक दिन हम खुद ही बिन छाया, बिन हवा और बिन जीवन रह जाएंगे। पेड़ों के बिना गांव की आत्मा ही खत्म हो जाएगी।"

लोगों ने उसकी बात सुनी भी और अनसुनी भी।

किसी ने हंसकर कहा—

"हजारी, तुम तो संत बनते जा रहे हो।"

दूसरे ने कहा—

"पेड़ों से भरा संसार तुम्हारे अकेले के बस का नहीं।"

पर जो लोग नहीं जानते थे, वह यह कि हजारी के भीतर एक ऐसी ज्वाला थी जो हंसी, उपहास, तानों से बुझने वाली नहीं थी।

उसी रात हजारी ने आसमान की ओर देखकर एक दृढ़ संकल्प लिया—

वह रोज खेत आते-जाते दो पौधे लगाएगा, चाहे दुनिया उसका साथ दे या अकेला छोड़ दे।

अगले दिन वह एक छोटा-सा पौधा लेकर मिट्टी में घुटनों के बल बैठा, उसे रोपा, पानी दिया, और बहुत स्नेह से उसकी पत्तियों पर हाथ फेरा। ठीक उसी तरह जैसे कोई पिता अपने बच्चे के सिर पर हाथ रखता है।

वह रोज ऐसा करने लगा।

सुबह दो पौधे, शाम को दो पौधे।

बारिश हो या धूप, आंधी हो या ठंडी हवा—हजारी के कदम नहीं डगमगाते।

गांव के लोग उसे देखकर मजाक उड़ाते रहते—

"लो आता है जंगलवाला!"

"लगता है खेती छोड़कर साधु बन गया है!"

पर हजारी के चेहरे पर कभी शिकन न देखी गई।

वह जानता था कि जो बीज वह बो रहा है, वे सिर्फ मिट्टी में नहीं—लोगों के मन में भी उगेंगे।

धीरे-धीरे यही हुआ।

गांव के कुछ युवा हजारी की दृढ़ता और उसकी मौन साधना से इतना प्रभावित हुए कि एक दिन वे उसके पास आए।

"काका," उन्होंने कहा, "हम भी आपके साथ पेड़ लगाएंगे।"

हजारी के चेहरे पर उस समय जो शांति, जो संतोष और जो चुपचाप खुशी आई, वह किसी भी बड़े पुरस्कार से अधिक थी।

अब गांव में एक आंदोलन सा शुरू हो गया। पौधे रोपे जाने लगे, उनके लिए मेड़ें बनाई गईं, पानी दिया गया, चारों तरफ उनकी रखवाली की गई।

जहां पहले बंजर जमीन थी, वहां अब छोटी-छोटी हरियाली की रेखाएं खिंचने लगीं।

फिर एक समय आया जब ये रेखाएं मिलकर एक हरा-भरा संसार बन गईं।

लोग हतप्रभ रह गए।

उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक अकेले आदमी का संकल्प पूरे गांव का रूप बदल देगा।

आज पेड़ों की वही कतारें हजारों में खड़ी हैं—आधी हवा में झूमती, आधी मिट्टी में गहरी जड़ें जमाए।

वह स्थान अब किसी तपस्वी के आश्रम जैसा शांत, सुंदर और जीवनदायी लगने लगा।

गांव के बुजुर्ग कहने लगे—

"यह जगह अब सिर्फ बाग नहीं, यह हजारी की तपस्या का फल है।"

और धीरे-धीरे इसे कहा जाने लगा—

हजारी का बाग।

समय के साथ यह नाम बदलते-बदलते हजारीबाग बन गया,

और आज वही हजारीबाग झारखंड का एक प्रसिद्ध, मन को शांति देने वाला और बेहद सुंदर पर्यटक स्थल है।

लेकिन इस जगह की सबसे खूबसूरत बात उसकी हरियाली नहीं,

बल्कि वह कहानी है जिसके चलते यह हरियाली उग पाई—

एक अकेले किसान की तपस्या, जो दुनिया के उपहास पर भारी पड़ी,

जिसने मिट्टी में उम्मीद बोई और उसे जंगल में बदल दिया।

यह कहानी बताती है कि

जब किसी का दिल धरती से जुड़ जाए,

तो वह अकेला भी पूरी दुनिया की दिशा बदल सकता है।

आतंक के खिलाफ कठिन हुई लड़ाई, बड़े खतरे का संकेत

जिहादी डाक्टरों के फरीदाबाद आतंकी माड्यूल का भंडाफोड़ हो जाने के बाद भी जिस तरह वह कई लोगों की जान लेने में समर्थ रहा, उसके बाद इस पर बहस होना स्वाभाविक है कि पुलिस और खुफिया एजेंसियों से कहां क्या चूक हुई? इस चूक के चलते दिल्ली में लाल किले के निकट कार धमाके में 15 लोग मारे गए और श्रीनगर के एक थाने में नौ लोग। दोनों जगह उसी विस्फोटक ने अलग-अलग कारणों से कहर ढाया, जिसे इस आतंकी माड्यूल ने फरीदाबाद में जमा किया था। यह आतंकी माड्यूल और अधिक कहर बरपा सकता था, यदि श्रीनगर पुलिस ने शहर में जैश-ए-मोहम्मद के समर्थकों की ओर से लगाए पोस्टरों को गंभीरता से नहीं लिया होता। इन पोस्टरों के जरिये कश्मीर के लोगों को सुरक्षा एजेंसियों की मदद करने के खिलाफ चेतावनी दी गई थी। कश्मीर में ऐसे पोस्टर लगना आम बात रही है, लेकिन श्रीनगर के नौगाम थाने की पुलिस ने उन्हें गंभीरता से लिया। पहले उसकी पकड़ में आतंकियों के समर्थक कुछ पत्थरबाज आए। उनके जरिये पुलिस जिहाद का पाठ पढ़ा रहे एक मौलवी तक पहुंची। उससे पूछताछ के बाद ही फरीदाबाद के आतंकी माड्यूल का भंडाफोड़ हुआ। इस माड्यूल के आतंकियों के पास से विस्फोटक और घातक हथियार बरामद किए गए। यदि श्रीनगर पुलिस ने अपने इलाके में लगे पोस्टरों को गंभीरता से नहीं लिया होता तो संभवतः जिहादी डाक्टर अपनी उस साजिश को भी अंजाम देने में सफल हो गए होते, जिसके तहत एक साथ कई ठिकानों पर बड़े पैमाने पर हमले किए जाने थे। उनके इरादे कितने खूंखार थे, इसका पता लाल किले के निकट कार में धमाका करने वाले मजहबी उन्माद से भरे आतंकी उमर के उस वीडियो से मिलता है, जिसमें वह आत्मघाती हमलों को जायज ठहराते सुना जा सकता है। लाल किला आतंकी हमला एक बार फिर यह बता रहा है कि ऐसे हमले तब संभव हो पाते हैं, जब आतंकियों को स्थानीय स्तर पर शरण और समर्थन मिलता है। इसका उदाहरण पहलगाम का आतंकी हमला भी था। यहां पाकिस्तान से आए आतंकी कहर बरपाने में इसलिए सफल रहे थे, क्योंकि उन्हें कुछ स्थानीय लोगों ने शरण दी थी। अब इसमें कोई संदेह नहीं कि डाक्टर आतंकियों को फरीदाबाद में एक मौलवी और अन्य अनेक की ओर से जो संरक्षण और सहयोग मिला, उसी कारण वे घातक विस्फोटक जमा करने में समर्थ रहे। यदि फरीदाबाद की अल फलाह यूनिवर्सिटी जिहादी तत्वों की शरणगाह के रूप में देखी जा रही है तो इसके लिए वह अपने अलावा अन्य किसी को दोष नहीं दे सकती। इस यूनिवर्सिटी के जो डाक्टर आतंकी निकले, उनमें से दो पहले जहां कार्यरत थे, वहां से बर्खास्त किए जा चुके थे। एक तो आतंकवाद को खुला समर्थन देने के गंभीर आरोप में और दूसरी लंबे समय तक बिना बताए अनुपस्थित रहने के कारण। यह अल फलाह यूनिवर्सिटी ही बता सकती है कि उसने ऐसे संदिग्ध अतीत वाले डाक्टरों को अपने यहां नियुक्ति क्यों दी? यदि डाक्टर आतंकी बन जाएं और वे आसानी से एक यूनिवर्सिटी को अपना अड्डा बना लें तो इसका मतलब है कि जिहादी आतंक को खाद-पानी देने वाले तंत्र ने अपनी जड़ें बहुत गहरे तक जमा ली हैं। अल फलाह यूनिवर्सिटी के संदेह से घिरने के बाद यह भी पता चल रहा है कि उसके संस्थापक वाइस-चांसलर का भी आपराधिक रिकार्ड रहा है और वह धोखाधड़ी में तीन साल जेल में गुजार चुका है। इस यूनिवर्सिटी में कश्मीरी डाक्टरों की बड़ी संख्या में नियुक्ति भी सवाल खड़े करती है। आखिर यह कोई नामी यूनिवर्सिटी नहीं। यह नहीं कहा जा सकता कि कश्मीरी डाक्टरों को अन्य कहीं नौकरी नहीं मिल रही थी, इसलिए अल फलाह की ओर रुख करना उनकी मजबूरी बन गई थी। बहुत संभव है कि अल फलाह जिहादी इरादों वाले डाक्टरों की पसंदीदा यूनिवर्सिटी इसलिए बन गई हो, क्योंकि यहां उन्हें अपनी गतिविधियां चलाना आसान दिखा हो। इस यूनिवर्सिटी के इरादों के प्रति संदेह का एक आधार उसकी ओर से यह फर्जी दावा करना भी है कि उसे राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद यानी नैक की मान्यता प्राप्त है। साफ है कि अल फलाह यूनिवर्सिटी का संचालन तय नियम-कानूनों के अनुरूप हो, इसकी निगरानी ढंग से नहीं हो रही थी। अब यदि निगरानी के अभाव में उच्च शिक्षा संस्थान आतंकियों के ठिकाने बन जाएंगे तो फिर यह समझ लिया जाना चाहिए कि जिहादी आतंक के खिलाफ लड़ाई और कठिन होने वाली है। यह लड़ाई पहले से ही इसलिए कठिन दिखने लगी है, क्योंकि डाक्टरों के एक समूह ने जिहादी बनना पसंद किया। क्या आतंक की राह पर चलने को तैयार डाक्टरों या ऐसे ही अन्य उच्च शिक्षित युवाओं को डी-रेडिकलाइज करना संभव है? फरीदाबाद आतंकी माड्यूल में दो मौलवी भी शामिल पाए गए हैं। यदि दीन-ईमान की शिक्षा देने वाले ही जिहादी आतंक का पाठ पढ़ाने लगें तो फिर आतंकवाद के खिलाफ लड़ी जाने वाली कठिनाई को और अच्छे से समझा जा सकता है। यह लड़ाई इसलिए और कठिन होने वाली है, क्योंकि ऐसे स्वर भी उभर रहे हैं कि डाक्टर इसलिए आतंकी बन गए, क्योंकि मुसलमानों के साथ सही व्यवहार नहीं किया जा रहा है। ऐसा स्वर एक-दुक्का नेताओं का ही नहीं। एक लंबे समय से कई नेताओं का यही स्वर है। ऐसे स्वर आतंक की राह पर चलने वालों को खुद को सही साबित ठहराने का ही मौका देते हैं।

अभियान

मां दुर्गा के 108 नामों का चमत्कार जिसकी रोशनी जीवन का हर अंधेरा मिटा देती है

हिंदू धर्म में नवरात्रि केवल व्रत-पूजा का समय नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों में जाकर उसे जागृत करने का एक अद्भुत अवसर है। कहा जाता है कि जब पृथ्वी पर अंधकार बढ़ने लगता है, जब मनुष्य का साहस टूटने लगता है, जब जीवन में बाधाओं की धारा रुकने का नाम नहीं लेती, तब शक्ति स्वयं अवतरित होती है। यही शक्ति मां दुर्गा है—जो सृष्टि की मूल ऊर्जा है, जो हर जीव के भीतर धड़कन की तरह स्पंदित होती रहती है, जो कभी गरिमा की तरह शांत है तो कभी क्रोध की तरह प्रचंड। और इसी देवी शक्ति को सबसे अधिक प्रभावी रूप से पुकारने का मार्ग है—उनके 108 दिव्य नामों का जाप।

कहते हैं कि मनुष्य का जीवन तब बदलता है जब उसका मन बदलता है, और मन तब बदलता है जब उसके भीतर सूक्ष्म ऊर्जा का प्रवाह उत्पन्न होता है। मां दुर्गा के 108 नाम ऐसे ही सूक्ष्म स्पंदन हैं, जिन्हें दोहराते ही वातावरण का कंपन बदलने लगता है। प्राचीन ऋषियों ने इन्हें साधारण शब्द नहीं, बल्कि शक्ति का सीधा आह्वान माना है। यह जाप केवल मंत्र नहीं, बल्कि एक ऐसी ऊर्जा है जो मनुष्य की नियति को भी नया आकार दे सकती है।

जब कोई व्यक्ति प्रतिदिन इन नामों का स्मरण करता है, तो धीरे-धीरे उसके जीवन पर फैला हुआ मानसिक कोहरा हटने लगता है। जिस मनुष्य को लगता है कि उसके प्रयास फल नहीं दे रहे, उसकी किस्मत बंद पड़ी है, घर में कलह है, स्वास्थ्य कमजोर है, या परिवार मानसिक तनाव से गुजर रहा है—उसके लिए यह जाप किसी वरदान से कम नहीं है। यह ऊर्जा वातावरण को साफ करती है, घर के भीतर छिपी नकारात्मक शक्ति को बाहर निकालती है और एक अदृश्य सुरक्षा कवच बनाती है जिसे कोई बुरा प्रभाव भेद नहीं सकता।

पुराणों में वर्णन आता है कि मां के हर नाम में एक विशिष्ट शक्ति समाई है। एक नाम भय को मिटाता है, दूसरा धन आकर्षित करता है, तीसरा बाधाएं दूर करता है, चौथा संतान-सुख देता है, पांचवां आत्मविश्वास बढ़ाता है और कुछ नाम ऐसे हैं जो व्यक्ति के भाग्य को सोई हुई नदी की तरह जागृत कर देते हैं। यही कारण है कि अष्टोत्तर शतनामावली को केवल जाप नहीं, बल्कि शक्ति-संचार का एक रहस्यमय मार्ग कहा गया है।

कभी ग्रामीण भारत के किसी कोने में, तो कभी हिमालय के शांत आश्रमों में, रात की निस्तब्धता में साधक जब इन 108 नामों का स्मरण करते थे, तो पूरी प्रकृति उस कंपन को सुनती थी। पत्तों की सरसराहट, जल की लहरें और पक्षियों की धीमी चहचहाहट—सब मानो उस जाप की लय में बंध जाते थे। इस जाप की शक्ति जगत को बांधने वाली यही ताल है—देवी का स्मरण, जो मनुष्य और प्रकृति के बीच एक अदृश्य पुल बनाता है।

कभी ऐसा भी हुआ है कि एक परिवार लंबे समय से चली आ रही परेशानियों से घिरा रहा। घर के लोग बीमार पड़ते रहे, व्यापार में रुकावटें आती रहीं, बच्चों के मन में बेचैनी और डर का साया बना रहा। तब किसी ने उन्हें सलाह दी कि रोज सुबह धूप-दीप के साथ मां के 108 नामों का शांत मन से जाप करें। कुछ ही सप्ताह में घर का वातावरण बदलने लगा। जहाँ पहले कड़वाहट थी, वहाँ एक अनोखी शांति उतर आई। जहाँ पहले डर था, वहाँ आत्मविश्वास की किरण फूटने लगी। यह केवल कथाएँ नहीं—हजारों वर्षों का अनुभव है कि जहां देवी का नाम गूंजता है, वहां कोई भी नकारात्मक शक्ति टिक नहीं पाती।

कई लोग कहते हैं कि वे पूजा तो करते हैं, पर मन भटक जाता है। परंतु 108 नामों का जाप मन को बांधकर रखता है। जैसे-जैसे नाम बढ़ते जाते हैं, मन भी उसी क्रम में स्थिर होता चला जाता है, और अंत में ऐसा लगता है जैसे पूरे ब्रह्मांड का भार किसी ने कंधों से उतार दिया हो। ऐसा लगता है कि जीवन की गुत्थियाँ उलझी नहीं, बल्कि धीरे-धीरे सुलझने लगी हैं—जैसे कोई अदृश्य मातृ-हाथ सिर सहला रहा हो।

यह जाप केवल शक्ति को पुकारना नहीं, बल्कि मां को धन्यवाद देना भी है—जो बिना कहे भी हर दुख सुनती हैं, हर संकट काट देती हैं और हर भटके मन को उसके मार्ग दिखा देती हैं। नवरात्रि के समय तो यह जाप और भी तीव्र फल देता है, क्योंकि तब संपूर्ण वातावरण ही मां की ऊर्जा से परिपूर्ण होता है। लेकिन जो इसे रोज करते हैं, उनके जीवन में हर दिन नवरात्रि जैसा ही शुभ समय बना रहता है।

यह 108 नाम, जिन्हें दुर्गा अष्टोत्तर शतनामावली कहा जाता है, केवल शब्द नहीं—ये वह दीपक हैं जो जीवन के अंधकार को मिटाते हैं। कोई भी मनुष्य चाहे कितना ही टूट गया हो, भयभीत हो, अकेला हो या परेशान—अगर वह श्रद्धा से इन नामों का स्मरण करे, तो देवी उसे अवश्य उठाकर संभाल लेती हैं।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कोयंबटूर से पीएम-किसान सम्मान निधि के तहत देश के 9 करोड़ किसानों के बैंक खातों में 18 हजार करोड़ रुपए से अधिक की सहायता हस्तांतरित की

- पीएम-किसान सम्मान निधि की 21वीं किस्त से राज्य के 49.31 लाख किसानों को मिली 986 करोड़ रुपए की सहायता
- गांधीनगर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में किसान सम्मान निधि के साथ ही मुख्यमंत्री और कृषि मंत्री के करकमलों से 11.68 लाख रुपए से अधिक के विभिन्न कृषि सहायता के मंजूरी पत्रों का वितरण
- राज्य के किसानों ने प्रधानमंत्री के संबोधन का सीधा प्रसारण देखा
- हाल ही में हुई असाधारण बेमौसम बारिश से राज्य के किसानों को हुए नुकसान से उन्हें उबारने के लिए डबल इंजन सरकार ने बहुत ही कम समय में 10 हजार करोड़ रुपए का उदारतम राहत सहायता पैकेज दिया : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- प्रधानमंत्री की कृषि हितकारी नीति और किसानों के प्रति उनकी संवेदना के फलस्वरूप राज्य के 98 फीसदी से अधिक किसानों को दिन में बिजली मिल रही है
- प्रधानमंत्री ने बीज से लेकर बाजार तक के हर स्तर में किसानों के साथ खड़े रहकर उनका कल्याण सुनिश्चित किया है
- प्रधानमंत्री ने क्लाइमेट चेन्ज की चुनौतियों से निपटने के लिए ग्रीन कवर बढ़ाकर सुरक्षा प्रदान करने का दृष्टिकोण अपनाया
- प्राकृतिक खेती भविष्य की खेती है, मिट्टी और लोगों के स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक कृषि को अपनाना मौजूदा समय की मांग है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सदैव किसानों की चिंता करते हुए अनेक किसान-उन्मुख पहलें शुरू की हैं : कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि राज्य के किसानों पर हाल ही में आई असाधारण बेमौसम बरसात की विपदा से हुए नुकसान से उन्हें उबारने के लिए इस डबल इंजन सरकार ने बहुत ही तेजी से 10 हजार करोड़ रुपए का उदारतम सहायता पैकेज दिया है।

मुख्यमंत्री ने यह बात प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बुधवार को तमिलनाडु के कोयंबटूर से देश के किसानों के लिए पीएम-किसान सम्मान निधि योजना की 21वीं किस्त जारी करने के अवसर पर गांधीनगर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में कही। इस मौके पर राज्य के किसानों ने प्रधानमंत्री के संबोधन का सीधा प्रसारण देखा।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर देश भर के 9 करोड़ से अधिक किसानों के बैंक खातों में 21वीं किस्त के अंतर्गत 18 हजार करोड़ रुपए की सहायता राशि हस्तांतरित की। इस सहायता के तहत गुजरात के 49.31 लाख से अधिक किसानों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के जरिए 986 करोड़ रुपए मिले।

गांधीनगर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी और कृषि राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा ने पीएम-किसान सम्मान निधि के साथ ही 11.68 लाख रुपए से अधिक के विभिन्न कृषि सहायताओं के मंजूरी पत्रों का वितरण किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू की हैं। इतना ही नहीं, क्लाइमेट चेन्ज की चुनौतियों से निपटने के लिए 'एक पेड़ मां के नाम' और प्राकृतिक कृषि जैसे अभियानों के माध्यम से ग्रीन कवर बढ़ाकर सुरक्षा प्रदान करने का दृष्टिकोण अपनाया है।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि रसायन युक्त खेती से बिगड़ रहे जमीन और मानव के स्वास्थ्य को बचाने के उपाय के रूप में प्रधानमंत्री ने प्राकृतिक कृषि को अपनाने का जो विचार दिया है, वह भविष्य की पीढ़ी के स्वस्थ एवं तंदुरुस्त जीवन तथा जमीन की उर्वरता बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने प्राकृतिक कृषि को भविष्य की खेती करार देते हुए कहा कि इसे अपनाना मौजूदा समय की मांग है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री बीज से लेकर बाजार तक के हर स्तर पर किसान हितकारी निर्णयों के जरिए उनके साथ खड़े रहे हैं। प्रधानमंत्री ने इस वर्ष के बजट में पीएम धन-धान्य कृषि योजना शुरू करने का कमिटमेंट किया था, जिसे उन्होंने अन्नदाता की चिंता करते हुए 6 वर्षों की अवधि के लिए लागू करके यह सिद्ध किया कि वे जो कहते हैं, वह करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कृषि हितकारी नीति एवं किसानों के प्रति संवेदना के कारण आज गुजरात के लगभग 98 प्रतिशत से अधिक किसानों को दिन में बिजली मिल रही है। किसानों को पर्याप्त पानी व बिजली मिलने के कारण राज्य के कृषि क्षेत्र की तसवीर समग्रतया बदल गई है तथा किसान समृद्ध हुआ है।

श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा गुजरात में 2005 में अपने मुख्यमंत्रित्व काल में शुरू कराए गए कृषि महोत्सव के तहत राज्य सरकार खुद चलकर किसानों के खेत में जाती है और उन्हें इसकी समझ देती है कि कौन-सी फसल लगानी चाहिए, मूल्यवर्धन करके किस तरह अधिक आय प्राप्त हो सकती है। इससे लैब टू लैंड का दृष्टिकोण भली-भांति साकार हुआ है।

इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सदा-सर्वदा किसानों की चिंता की है। राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा देश के प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने अनेक कृषि-उन्मुखी पहलें की हैं, जिसे आज राज्य के उदार एवं दृढ़ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अच्छी तरह से आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री वाघाणी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा तमिलनाडु से आज 'पीएम किसान सम्मान निधि' योजना की 21वीं किस्त का वर्चुअल माध्यम से वितरण किया गया है, जिसमें राज्य के कृषि विज्ञान केंद्र, ग्राम पंचायत, एपीएमसी आदि से लगभग 3 लाख किसान ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।

कृषि मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा किसानों के लिए मशीनीकरण, फसल संरक्षण, कृषि में नैनो टेक्नोलॉजी तथा आईटी का उपयोग, प्राकृतिक खेती, जीरो बजट खेती, किसानों के लिए उत्पादन बढ़ाने, खर्च घटाने व अधिक बिक्री की व्यवस्थाएं की गई हैं। उन्होंने कहा कि आज दिन-प्रतिदिन हमारी कृषि भूमि बंजर होती जा रही है, जिसके कारण वर्तमान एवं भावी पीढ़ियां अनेक रोगों का शिकार न बनें; इसके लिए प्राकृतिक कृषि को अपनाना चाहिए। इसके अंतर्गत राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में मिशन मोड पर कार्य किया जा रहा है।

श्री वाघाणी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने किसानों को उपकार भाव से नहीं, बल्कि सेवा के भाव से सम्मान देने के लिए वर्ष 2019 से 'पीएम-किसान सम्मान निधि' योजना की समग्र देश में शुरुआत कराई है। इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन तथा पूर्ण पारदर्शिता के फलस्वरूप किसानों के बैंक खातों में पैसा सीधे पहुंच रहा है। कृषि उत्पादों का बाजार में दाम नीचा हो, तब एमएसपी से खरीद का बड़ा निर्णय भी प्रधानमंत्री द्वारा किया गया है। राज्य में किसानों ने 293 केंद्रों पर लगभग एक लाख मीट्रिक टन से अधिक मूंगफली पहुंचाई है। आज राज्य में 1100 करोड़ रुपए से अधिक की खरीदारी हो चुकी है।

कृषि विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. अंजू शर्मा ने स्वागत संबोधन में कहा कि किसानों के कल्याण के लिए सरकार द्वारा बुवाई से बिक्री तक की योजनाएं लागू की गई हैं। सरकार संशोधित बीजों, उर्वरकों, यांत्रिक औजारों, प्राकृतिक खेती, कृषि राहत पैकेज, समर्थन मूल्य पर खरीद से जुड़ी योजनाओं के माध्यम से किसानों की सहायक हो रही है। नए आई-किसान पोर्टल 2.0 पर आवेदन कर किसान अनेक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री ने देश के किसानों के साथ संवाद किया। मुख्यमंत्री के करकमलों से 15 किसान लाभार्थियों को कृषि, बागवानी की विभिन्न योजनाओं की सहायता का वितरण किया गया।

इस कार्यक्रम में कृषि राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा, महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिल्पाबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, गुजरात कृषि उद्योग निगम (जीएआईसी) के प्रबंध निदेशक श्री विजय खराडी, जिला कलेक्टर श्री मेहुल दवे, जिला विकास अधिकारी श्री बी. जे. पटेल तथा बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनों के समय में संशोधन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे की दो जोड़ी ट्रेनों के ठहराव के समय में तत्काल प्रभाव से संशोधन किया गया है। इसका विवरण निम्नानुसार है।

1. ट्रेन संख्या 10115 बांद्रा टर्मिनस - मडगाँव एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 10115 बांद्रा टर्मिनस - मडगाँव एक्सप्रेस के ठहराव का समय संशोधित कर रत्नागिरी स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 16:05/16:10 बजे के बजाय 15:35/15:40 बजे कर दिया गया है।

कणकवली स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 18:40/18:42 बजे के बजाय 18:00/18:02 बजे होगा।

सिंधुदुर्ग स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 19:00/19:02 बजे के बजाय 18:20/18:22 बजे होगा।

2. ट्रेन संख्या 19259 तिरुवनंतपुरम नॉर्थ - भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 19259 तिरुवनंतपुरम नॉर्थ - भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस के ठहराव का समय संशोधित कर सिंधुदुर्ग स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 12:20/12:22 बजे के बजाय 12:50/12:52 बजे कर दिया गया है।

ट्रेनों के ठहराव और समय के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भावनगर रेलवे मंडल से होकर चलने वाली 4 ट्रेनें परिवर्तित मार्ग से चलेंगी

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के गांधीनगर जयपुर स्टेशन के पुनर्विकास और बड़े स्तर पर उन्नयन कार्य के मद्देनजर 9 नवंबर से 13 दिसंबर, 2025 तक 35 दिनों का ब्लॉक लिया गया है, जिसके कारण भावनगर मंडल की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:

1. पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस तत्काल प्रभाव से 12 दिसंबर, 2025 तक परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रूकेगी।

2. पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस 09 दिसंबर, 2025 तक परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।

3. दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20938 दिल्ली सराय रोहिल्ला-पोरबंदर एक्सप्रेस 24 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।

4. 25 नवंबर, 2025 को अयोध्या कैंट से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19202 अयोध्या कैंट-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-अहमदाबाद-विरमगाम स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।

जेल की दीवारों के भीतर छिपा अंधेरा: कोट भलवाल की उच्च सुरक्षा बैरकों में काउंटर इंटेलिजेंस का बड़ा धावा, आतंकी नेटवर्क की परतें उधड़ने लगीं

(जीएनएस)। जम्मू की कड़ी सुरक्षा में ढकी हुई सुबह आज अचानक हलचल से भर उठी, जब काउंटर इंटेलिजेंस की विशेष टीमों ने चुपचाप कोट भलवाल जेल के मुख्य द्वार की ओर बढ़ना शुरू किया। यह वही जेल है, जहाँ देश के सबसे कुख्यात अपराधियों, पाकिस्तान समर्थित आतंकियों और घाटी के कई हार्डकोर मिलिटेंट्स को कठोर सुरक्षा में रखा जाता है। लेकिन आज हालात कुछ अलग थे—जेल की ऊँची दीवारों के भीतर जो खामोशी फैली थी, वह इस बात का संकेत दे रही थी कि कोई बड़ा अभियान शुरू हो चुका है।

जैसे ही पुलिस की विशेष टीमें जेल प्रबंधन को आदेश दिखाकर भीतर दाखिल हुईं, परिसर में तनाव की लकीरें फैल गईं। निरीक्षण के लिए भेजी गई इकाइयों के पास साफ इनपुट था कि जेल के अंदर से एक संगठित आतंकी नेटवर्क अपने पैर फैलाने की कोशिश कर रहा है—एक ऐसा नेटवर्क, जो सिर्फ फोन कॉल या चिट्ठियों से नहीं, बल्कि बाहरी दुनिया में होने वाले विस्फोटों तक को निर्देशित करने में भूमिका निभा सकता है। हाल में डॉक्टरों के एक समूह द्वारा चलाए जा रहे सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल का पर्दाफाश और 10 नवंबर को दिल्ली के लालकिले के पास कार में हुए विस्फोट की जांच ने इस शक को और मजबूत कर दिया था।

कोट भलवाल जेल का नाम पहले भी कई बार विवादों में आ चुका है—यहाँ बंद कई पाकिस्तानी आतंकियों पर हिंसक झड़पों, उकसावे और छिपे संदेशों के जरिये जेल के भीतर अपने गुट मजबूत करने के आरोप लगते रहे हैं। लेकिन इस बार हालात कहीं ज्यादा गंभीर बताए जा रहे थे। काउंटर इंटेलिजेंस को इनपुट मिला था कि बाहरी आतंकवादी संगठनों के साथ जेल के अंदर बैठे कुछ कैदियों की गुप्त संचार श्रृंखला सक्रिय हो चुकी है। ये संपर्क किस तरह बनाए गए, किसने किसको सुविधा दी, और कौन-सा संदेश कहाँ तक पहुँचाया गया—इन्हीं जवाबों की तलाश में आज की पूरी छापेमारी केंद्रित थी।

जेल के अंदर कई बैरकों में सामान खंगाले गए—कैदियों के बिस्तरों, निजी कपड़ों, वॉशरूम के अंदरूनी हिस्सों, किताबों में छिपे नोट्स और यहां तक कि खाद्य सामग्री की पैकिंग तक की सख़्त जांच की गई। कई जगहों पर मिले छोटे-छोटे कागज़, हस्तलिखित कोड, संदिग्ध चिह्न और कुछ डिजिटल टुकड़े इस बात का संकेत दे रहे थे कि जेल के भीतर एक लंबे समय से चल रही छिपी गतिविधि पर किसी ने चुपचाप काम किया है।

अधिकारियों के अनुसार, यह सिर्फ एक रूटीन सर्च नहीं थी—यह एक व्यापक और योजनाबद्ध रैकेट को जड़ से उखाड़ने की शुरुआत है। दिल्ली के लालकिला क्षेत्र में कार विस्फोट की गुत्थी अभी पूरी तरह सुलझी नहीं है, और जांच एजेंसियों को शक था कि किसी कैदी ने इस घटना से जुड़े व्यक्तियों को सलाह या निर्देश जेल के भीतर से भेजे हो सकते हैं। इसी शक ने कोट भलवाल पर त्वरित और कठोर कार्रवाई को जन्म दिया।

जेल के बाहर तैनात सुरक्षा संसाधनों को बढ़ा दिया गया है। अंदर की कई बैरकें सील कर दी गईं, और कुछ कैदियों को अस्थायी अलगाव में रखा गया है।

वडोदरा मंडल ने भारतीय रेलवे पर पहली बार ई-नीलामी नवाचार के माध्यम से "अपनी तरह का पहला" वेयरहाउसिंग अनुबंध किया

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल के वाणिज्य विभाग ने गैर-किराया राजस्व (नॉन फेयर रिवेन्यू) पहल को उल्लेखनीय बढ़ावा देते हुए, भारतीय रेलवे पर पहली बार ई-नीलामी नवाचार के माध्यम से एक वेयरहाउस सुविधा के लिए "अपनी तरह का पहला" अनुबंध सफलतापूर्वक किया है। इस पहल के तहत वडोदरा स्टेशन पार्सल कार्यालय के पास पहले से खाली पड़े स्थान की पहचान कर, उसका प्रभावी सदुपयोग किया गया और एक गैर-निष्पादित परिसंपत्ति को रेलवे के लिए एक आकर्षक राजस्व स्रोत में बदल दिया गया।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मंडल के वाणिज्य विभाग ने यह उपलब्धि ई-नीलामी मॉड्यूल में एक विशेष श्रेणी के निर्माण के माध्यम से हासिल की गई। इस तरह के नवाचार से भारतीय रेलवे में अधिक लचीले परिसंपत्ति मुद्रीकरण का मार्ग प्रशस्त होता है। इस अनुबंध का मूल्य तीन वर्षों की अवधि के लिए 24.33 लाख रुपये है, जो रेलवे के अपने संसाधनों के मुद्रीकरण को अधिकतम करने के उद्देश्य की दिशा में एक सफल कदम है। यह समर्पित वेयरहाउसिंग सुविधा लॉजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करती है, जिससे पार्सल यातायात की अधिक मात्रा आकर्षित होने की उम्मीद है। स्टेशन पर एक निर्दिष्ट भंडारण क्षेत्र उपलब्ध कराने से, प्लेटफार्मों पर पार्सल पैकेजों के रखने में उल्लेखनीय कमी आएगी, जिससे यात्रियों की आवाजाही सुगम होगी। साथ ही वडोदरा स्टेशन पर पहले से खाली पड़े क्षेत्र की साफ़ - सफाई भी बेहतर ढंग से हो सकेगी, जिससे रेलवे के रखरखाव की लागत में कमी आएगी। इस स्थान के उपयोग से अनधिकृत अतिक्रमणों और अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगेगा और समग्र स्टेशन सुरक्षा में वृद्धि होगी। यह पहल प्रभावी स्थान प्रबंधन के लिए एक आदर्श उदाहरण है।

उत्तर प्रदेश से आए पीएम स्वनिधि योजना के लाभार्थी के लिए भारत पर्व बना एक यादगार अनुभव

एकता नगर में फूड स्टॉल से हुई अच्छी कमाई, गुजरात की संस्कृति और उद्यमिता बनी प्रेरणा

(जीएनएस)। गांधीनगर : उत्तर प्रदेश निवासी धनेश कुमार गुप्ता ने हाल ही में एकता नगर में आयोजित भारत पर्व में हिस्सा लिया था, जो उनके लिए एक यादगार अनुभव बन गया है। वे प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना के लाभार्थी हैं और पारंपरिक व्यंजनों का जायका लोगों तक पहुंचाते हैं। गुजरात सरकार ने उन्हें एकता नगर में आयोजित भारत पर्व में स्टॉल लगाने के लिए आमंत्रित किया था, जिससे उन्हें अच्छी कमाई भी हुई है, और अब उन्हें अपने व्यवसाय को और आगे बढ़ाने की प्रेरणा भी मिली है। इटावा निवासी धनेश कुमार ने भारत पर्व में लोगों को रबड़ी और स्वादिष्ट केसर दूध का स्वाद चखाया। स्वाद, शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे उनके द्वारा तैयार व्यंजन देखते ही देखते लोकप्रिय बन गए और उनका स्टॉल आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया। गुजरात में अपने इस पहले अनुभव के बारे में धनेश कुमार उत्साहपूर्वक बताते हैं, "भारत पर्व में शामिल होना मेरे जीवन के सबसे यादगार अनुभवों में से एक है। मुझे अपने स्टॉल पर आने वाले लोगों में विनम्रता देखने को मिली। आगंतुकों ने हमारे व्यंजनों का जमकर लुत्फ उठाया

और उनकी प्रशंसा भी की। मुझे यहां आमंत्रित करने के लिए मैं गुजरात सरकार का आभारी हूं। उम्मीद है कि मैं अगले साल फिर यहां आऊंगा और गुजरात की स्वाद प्रेमी जनता को नए व्यंजनों का स्वाद चखाऊंगा।"

इस कार्यक्रम में शामिल होने से धनेश कुमार का आत्मविश्वास काफी बढ़ गया है। भारत पर्व के दौरान उन्होंने 60 हजार रुपए की कमाई की है, जो बताता है कि स्ट्रीट वेंडर्स यानी पथ विक्रेताओं और छोटे दुकानदारों को आर्थिक रूप से सशक्त करने का पीएम स्वनिधि योजना का उद्देश्य सकारात्मक रूप से साकार हो रहा है।

स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए भारत पर्व जैसे कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करते हैं, जिसमें भारत की संस्कृति और विविधतापूर्ण व्यंजनों की झलक भी दिखाई देती है। धनेश कुमार गुप्ता के लिए यह कार्यक्रम केवल एक व्यावसायिक अवसर ही नहीं, बल्कि एक ऐसा यादगार अनुभव भी रहा है, जो उनकी आर्थिक सशक्तिकरण की यात्रा को और भी मजबूत एवं गौरवमय बनाता है।

लालकिला धमाके की गूंज: अल-फलाह यूनिवर्सिटी के संस्थापक जावेद सिद्दीक़ी 13 दिन की ईडी रिमांड पर, आतंक नेटवर्क की परतें और गहरी

(जीएनएस)। नई दिल्ली की रात अभी पूरी तरह ढली भी नहीं थी कि साकेत अदालत परिसर में हलचल तेज हो गई। घड़ी ने करीब एक बजने का संकेत दिया ही था कि ईडी की टीम अल-फलाह यूनिवर्सिटी के संस्थापक जावेद अहमद सिद्दीक़ी को कड़ी सुरक्षा में अदालत के भीतर लेकर दाखिल हुई। बाहर खड़े अफसरों की आँखों में साफ-साफ देखा जा सकता था कि मामला सिर्फ आर्थिक अपराध का नहीं, बल्कि एक ऐसे जाल का है जिसकी डोरें लालकिला विस्फोट के खून-खराबे से जुड़ चुकी हैं।

10 नवंबर को दिल्ली के दिल—लालकिला—के पास आई-10 कार में हुए धमाके में 13 लोगों की मौत और 32 लोग घायल हुए थे। शुरुआत में यह मामला महज कार विस्फोट माना गया, लेकिन जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी, कहानी पूरी तरह बदलती चली गई। डॉक्टरों का सफेदपोश नेटवर्क, विश्वविद्यालय से जुड़े लोगों की संदिग्ध गतिविधियाँ, अवैध फंडिंग के रास्ते और तकनीक में प्रशिक्षित युवाओं का इस्तेमाल—इन सबने सुरक्षा एजेंसियों को इस नतीजे तक पहुंचा दिया कि यह कोई अचानक हुआ हमला नहीं, बल्कि पूरी तैयारी के साथ रची गई एक संगठित योजना थी।

इसी पृष्ठभूमि में, अदालत ने बुधवार को जावेद सिद्दीक़ी को 13 दिनों की ईडी रिमांड पर भेजने का आदेश दिया। जज

शीतल चौधरी प्रधान के इस फैसले ने साफ संकेत दिया कि जांच एजेंसियों के पास ऐसे सबूत मौजूद हैं जो यूनिवर्सिटी के आर्थिक लेन-देन को सीधे आतंकी नेटवर्क से जोड़ते हैं। ईडी को संदेह है कि अल-फलाह यूनिवर्सिटी का नाम सिर्फ शिक्षा से नहीं, बल्कि कुछ ऐसे गुप्त फंडिंग रास्तों से भी जुड़ा है जिनसे कार बम साजिश को हवा मिली।

लालकिला विस्फोट की कहानी का एक और दिल दहलाने वाला हिस्सा है जसीर बिलाल वानी उर्फ दानिश का किरदार। एनआईए की गिरफ्त में आए दानिश ने कथित तौर पर ड्रोन तकनीक में बदलाव किए, विस्फोट से पहले रॉकेट जैसी डिवाइस तैयार की और मुख्य आरोपी डॉ. उमर नबी की ब्रेनवॉशिंग का शिकार होकर पूरे मॉड्यूल का हिस्सा बना। जांच टीम को यह भी पता चला कि उमर नबी केवल एक डॉक्टर नहीं था, बल्कि कई युवा छात्रों को धर्म, तकनीक और कट्टरपंथ के संगम पर खड़ा कर आतंक की राह दिखाने वाला मास्टरमाइंड था।

एनआईए ने इससे पहले आमिर रशीद अली को 10 दिन की हिरासत में लिया था—वह वही व्यक्ति है जिसने विस्फोट में इस्तेमाल की गई आई-10 कार मुख्य आरोपी उमर को उपलब्ध कराई। यह वही कार थी, जो 10 नवंबर की उस डरावनी शाम दिल्ली की सड़कों पर मौत बनकर घूमी। आमिर का फोन रिकॉर्ड, लोगों से उसकी मुलाकातें, और कार सौंपने का तरीका—सब कुछ इस बात की गवाही देता है कि वह इस साजिश का महज एक छोटा हिस्सा नहीं, बल्कि मुख्य लॉजिस्टिक लिंक था।

इन गिरफ्तारियों के बाद जांच का फोकस अब तेजी से फंडिंग की दिशा में मुड़ चुका है। एजेंसियों का मानना है कि धमाके की योजना तैयार होने से पहले ही बड़े पैमाने पर पैसे की आवाजाही हुई थी—कभी नकद, कभी दान के नाम पर, और कभी शैक्षणिक संस्थान की आड़ लेकर। इसी रहस्यमयी आर्थिक धुंध को साफ करने के लिए ईडी को जावेद सिद्दीक़ी की रिमांड की जरूरत थी।

दिल्ली की यह रात भले ठंडी थी, लेकिन अदालत परिसर में गर्मी थी—क्योंकि हर कदम पर यह सवाल तैर रहा था कि आखिर एक यूनिवर्सिटी के भीतर ऐसा क्या चल रहा था, जो सीधे देश की राजधानी में हुए भीषण विस्फोट तक पहुँच गया? जांच एजेंसियों का कहना है कि यह कहानी अभी शुरुआत है—और जैसे-जैसे गिरफ्तार लोगों के डिजिटल फुटप्रिंट्स, बैंकिंग रिकॉर्ड, और संपर्कों की परतें खुलेंगी, एक बड़ा आतंकी इकोसिस्टम सामने आ सकता है। जावेद सिद्दीक़ी की गिरफ्तारी और उससे जुड़ी छिपी परतें इस बात की गवाही हैं कि लालकिला विस्फोट किसी एक व्यक्ति की सनक नहीं था—यह एक लंबे समय से तैयार होती योजना का चरम था। अब अगली 13 दिन की ईडी पूछताछ पर पूरे देश की नजरें होंगी, क्योंकि शायद इन्हीं दिनों में यह साफ होगा कि शिक्षा की आड़ में किस तरह राजधानी में मौत का तंत्र बुना गया।

ससुर का नाम लिखकर बनवा ली वोटर ID - एसआईआर प्रक्रिया के बीच बांग्लादेशी नागरिक की स्वीकारोक्ति से हड़कंप, मतदाता सूची पर उठे गंभीर सवाल

(जीएनएस)। पश्चिम बंगाल में चल रही स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (SIR) प्रक्रिया के दौरान एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने मतदाता सूची की विश्वसनीयता और वोटर पहचान से जुड़े सुरक्षा मानकों पर गहरी चिंता खड़ी कर दी है। चुनाव आयोग के रिवीजन अभियान के बीच बांग्लादेश से आया एक व्यक्ति—मोहम्मद खलील मोल्ला—ने स्वीकार किया है कि उसने भारतीय वोटर ID बनवाने के लिए अपने वास्तविक पिता के नाम की जगह अपने ससुर का नाम लिखवाया था। यह स्वीकारोक्ति न केवल नियमों के उल्लंघन को उजागर करती है, बल्कि उन कमजोरियों को भी सामने लाती है जिनका फायदा उठाकर गैर-नागरिक भारतीय पहचान पत्र हासिल कर लेते हैं।

35 साल पहले आया, 2023 में बना वोटर कार्ड

मोहम्मद खलील मोल्ला ने बताया कि वह करीब 35 वर्ष पहले बांग्लादेश से भारत आया था। शुरू में वह तोपसिया में रहा, फिर हावड़ा के अमता और बाद में उलुबेरिया के श्रीरामपुर में बस गया। 2023 में उसने वोटर ID बनवाई और इस प्रक्रिया में उसने पिता के नाम वाले कॉलम में अपनी पत्नी के पिता का नाम दर्ज करा दिया। उसकी स्वीकारोक्ति ने SIR प्रक्रिया में जुटे अधिकारियों को सकते में डाल दिया है।

एक और मामला भी सामने आया

इसी दौरान ऐसा ही एक और मामला प्रकाश में आया, जिसमें शेख रेजाउल मंडल नामक व्यक्ति के वोटर कार्ड में पिता के नाम की जगह ससुर का नाम लिखा पाया गया। जांच में पत्नी के पिता का नाम इक़बाल मंडल मिला, जबकि उसके पति के पिता का नाम इकलास मंडल है। पत्नी ने जवाब देते हुए कहा कि उन्हें यह पता नहीं कि वोटर कार्ड में पिता के नाम बदलने की बात कैसे हुई। इस उत्तर ने मामले को और उलझा दिया है।

स्थानीय प्रशासन में बढ़ी परेशानी

राजापुर पुलिस स्टेशन के श्रीरामपुर क्षेत्र में यह मामला सामने आने के बाद अधिकारियों पर दबाव बढ़ गया है। इलाके में यह चिंता फैल गई है कि कहीं इस तरह के और भी मामले तो नहीं छिपे हैं।

मतदाता अधिकार और पहचान को लेकर बढ़ रहा असुरक्षा भाव

एसआईआर प्रक्रिया चुनाव आयोग द्वारा इसलिए चलाई जा रही है ताकि पात्र नागरिकों के नाम लिस्ट में जोड़े जाएं और अवैध या फर्जी प्रविष्टियों को हटाया जा सके। लेकिन इस तरह के खुलासों से स्थानीय लोगों में चिंता और गहराई है—क्या उनके दस्तावेज मान्य रहेंगे?

क्या उनका नाम सूची से हटाया जा सकता है?

क्या CAA के तहत आवेदन करने वालों के वोटिंग अधिकार सुरक्षित रहेंगे?

वोटर पहचान के इस संवेदनशील मुद्दे पर खलील मोल्ला की स्वीकारोक्ति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मतदाता सूची में पहचान की पुष्टि के मौजूदा सिस्टम में अभी भी कई तरह की चूकें हैं। यह घटना इस बात की ओर इशारा करती है कि SIR प्रक्रिया केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि मतदाता सूची को अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। यह मामला आने वाले दिनों में राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर और भी व्यापक चर्चा को जन्म दे सकता है—क्योंकि यह केवल एक व्यक्ति का मामला नहीं, बल्कि पहचान और नागरिकता से जुड़ी बड़ी चुनौती है।

नोएडा में निर्माणाधीन इमारत की छत ढही, मलबे में दबे मजदूरों की चीखों से दहला इलाका

(जीएनएस)। नोएडा के रबूपुरा क्षेत्र में मंगलवार दोपहर अचानक हुआ एक भयावह हादसा पूरे इलाके को स्तब्ध कर गया। गांव नगला हुकुम में महाबीर नामक व्यक्ति के मकान का निर्माण अंतिम चरण में था। तीन मंजिला इस इमारत की शटरिंग हटाने का काम चल रहा था। मजदूर रोज की तरह व्यस्त थे — कोई लकड़ी के पैनल निकाल रहा था, कोई लोहे की सपोर्ट को ढीला कर रहा था। लेकिन किसी को अंदाज़ा भी नहीं था कि कुछ ही पलों में आसमान जैसे उनके सिर पर आ गिरने वाला है। दोपहर का समय था, सूरज तेज़ था और मजदूर छत की शटरिंग निकाल रहे थे तभी अचानक एक तेज़ सी आवाज़ हुई — कड़क कड़ाम!

और देखते ही देखते पूरी छत भरभराकर नीचे गिर गई। धूल और सीमेंट का गुबार पूरे इलाके में फैल गया। चीख-पुकार के साथ भगदड़ मच गई। आठ मजदूर उसी पल मलबे के नीचे दब गए और उनकी कराहें बाहर खड़े लोगों के दिलों तक चीरती चली गईं।

स्थानीय लोग बिना किसी उपकरण के मलबा हटाने की कोशिश में जुट गए। कुछ ही देर बाद पुलिस, JCB मशीन और SDRF की टीम मौके पर पहुंची। घंटों के संघर्ष के बाद चार मजदूरों को बाहर निकाला गया। उन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार जारी है। लेकिन राहत की सांस के साथ ही बढ़ती बेचैनी भी है — क्योंकि अभी भी चार मजदूर मोटे कंक्रीट और लोहे की जालियों के नीचे फंसे हुए हैं।

घटना स्थल पर मौजूद लोगों का कहना है कि मलबे में दबे कुछ मजदूरों की मौत होने की आशंका है, लेकिन पुलिस प्रशासन ने अभी इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। परिवारों की आंखों में दहशत है, हाथ कांप रहे हैं, हर गुजरता पल भारी हो रहा है।

इलाके में एक डरावना सन्नाटा पसरा है, जिसे बीच-बीच में बस मशीनों की आवाज़ और बचाव दल की पुकारें तोड़ती हैं। धूप ढल रही है, लेकिन राहत की उम्मीद क्षीण नहीं हुई है। यह हादसा एक बार फिर सवाल खड़ा करता है — निर्माण कार्यों में लापरवाही कब तक मजदूरों की जान लेती रहेगी?

गांव के लोग, प्रशासन और पूरा क्षेत्र इस उम्मीद में है कि शायद मलबे के नीचे कोई सांस अभी भी बाकी हो और कोई चमत्कार दरवाज़ा खोल दे।

भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में उमड़ा जनसैलाब, दुनिया भर के रंग दिल्ली में सजे

(जीएनएस)। दिल्ली के प्रगति मैदान में चल रहा भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला बुधवार से आम लोगों के लिए खुलते ही एक जीवंत उत्सव में बदल गया। लंबे समय से इस मेले का इंतज़ार कर रहे दिल्ली-एनसीआर और दूसरे राज्यों से आए लोग सुबह से ही भीड़ बनाकर पहुंचने लगे। चमकीली रोशनी, देशी-विदेशी संस्कृति की मिली-जुली महक और दुकानों के सामने लगी कतारें मेले को एक बड़े उत्सव में बदल रही हैं। इस वर्ष प्रवेश शुल्क भी आम लोगों के लिए कम कर दिया गया है ताकि अधिक से अधिक लोग इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन का हिस्सा बन सकें। कार्यदिवसों में टिकट सिर्फ 80 रुपये और सप्ताहांत में 150 रुपये रखा गया है, जबकि बच्चों का टिकट क्रमशः 40 और 80 रुपये रहेगा। वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग आगंतुकों के लिए यह पूरा आयोजन निःशुल्क रखा गया है, जिससे हर वर्ग के लोग अपनी सुविधा से मेला घूम सकें। हॉलों में घूमते ही ऐसा लगता है मानो भारत और दुनिया एक ही छत के नीचे सिमट गए हों। इस बार मलेशिया, थाईलैंड, स्वीडन, कोरिया, यूएई, तुर्किये, ईरान, लेबनान, ट्यूनीशिया और मिश्र जैसे देशों ने अपने आकर्षक स्टॉल लगाए हैं। विदेशी कपड़ों की खुशबू से लेकर हैंडिक्राफ्ट, मसालों और आधुनिक तकनीकी उत्पादों तक, हर चीज़ आगंतुकों को अपनी ओर खींच रही है।

हॉल नंबर 1 में विदेशी पवेलियन के बीच बिहार की खुशबू भी लोगों को बांध रही है। यहां पारंपरिक व्यंजन और खासकर बिहार का मशहूर ठेकुआ लोगों का मन मोह रहा है। बच्चे इसे चखकर खुशी से उछल पड़ रहे हैं, जबकि बड़े इसे अपने बचपन की यादों से जोड़ते देखे गए।

यह मेला 27 नवंबर तक सुबह 10 बजे से शाम 5:30 बजे तक खुला रहेगा। टिकट मेट्रो स्टेशन काउंटर, सारथी ऐप और आईटीपीओ की वेबसाइट से खरीदे जा सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन और भारत मंडपम गेट पर टिकट नहीं मिलेंगे, ताकि भीड़ नियंत्रित रखी जा सके।

प्रवेश के लिए आगंतुकों को भारत मंडपम के गेट 3, 4, 6 और 10 से ही अंदर जाने की अनुमति होगी। पार्किंग परिसर में नहीं है, लेकिन बेसमेंट पार्किंग 1 और 2 सहित भैरों मंदिर रोड पर वाहनों को निर्धारित शुल्क पर खड़ा किया जा सकता है।

अमीरी की चमक छोड़ मोक्ष के मार्ग पर 18 साल का जश मेहता - डायमंड, घड़ियों और लग्जरी कारों से भरी जिंदगी को त्यागकर जैन मुनि बनने की अनोखी यात्रा

(जीएनएस)। गुजरात के सूरत शहर में हीरों की चमक दुनिया भर में मशहूर है, और इन्हीं हीरों के बीच पला-बढ़ा एक 18 साल का युवक अब ऐसी राह पर निकलने जा रहा है, जिसे देखकर हर कोई हैरान भी है और प्रेरित भी। जश मेहता—एक नाम जो अब तक लग्जरी घड़ियों, ब्रांडेड चश्मों, हाई-एंड कारों और ओरिजिनल डायमंड ज्वेलरी के शौक के लिए जाना जाता था—23 नवंबर को वह सबकुछ छोड़कर जैन मुनि बन जाएगा। शहर के प्रतिष्ठित डायमंड इंडस्ट्रियलिस्ट परिवार में जन्मे जश ने अपनी उम्र के युवाओं के विपरीत दुनिया की चमक-दमक से मुंह मोड़कर त्याग और तपस्या के मार्ग पर चलने का निश्चय किया है।

जश की माँ ने गर्व के साथ बताया कि परिवार उसके फैसले के साथ है। उनका कहना है कि जश को जीवन की हर सुख-सुविधा पसंद थी—महंगे गहनों से लेकर महंगी घड़ियों तक, घूमने-फिरने से लेकर स्वादिष्ट भोजन तक—लेकिन पिछले कुछ समय से वह भीतर से बदलने लगा था। परिवार का मानना है कि यह बदलाव अचानक नहीं आया, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक यात्रा का परिणाम है। यह यात्रा पाँच साल पहले शुरू हुई, जब जश ने अपने चाचा को दीक्षा लेते देखा। उनके चाचा भी कभी आलीशान जिंदगी जीते थे, लेकिन एक छोटी-सी आध्यात्मिक किताब पढ़ने के बाद उनका जीवन बदल गया। यह परिवर्तन जश की सोच पर गहराई से असर कर गया। धीरे-धीरे उसके भीतर यह समझ विकसित हुई कि भौतिक चीजें—चाहे कितनी भी महंगी क्यों न हों—लेकिन मृत्यु के बाद कुछ साथ नहीं जातीं। यही सोच उसे अपने गुरु के पास ले गई और वहीं से शुरू हुआ उसका त्याग मार्ग की ओर बढ़ना।

अब जश यशोविजय सुरेश्वरजी महाराज के मार्गदर्शन में दीक्षा लेने जा रहा है। 18 साल की उम्र, जब युवा ज़िंदगी को नए सपनों और इच्छाओं से सजाते हैं, उसी उम्र में जश मेहता ने उन सपनों को छोड़कर आत्मकल्याण की राह पकड़ी है।

जैन मुनि बनना कितना कठिन होता है?

दीक्षा कोई साधारण निर्णय नहीं है। जैन मुनि बनने का अर्थ है त्याग, अनुशासन और तपस्या से भरा जीवन अपनाना। जैन धर्म के पाँच महाव्रत—अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—जीवन के केंद्र बन जाते हैं। सांसारिक संपत्तियों, रिश्तों, सुख-सुविधाओं, इच्छाओं और भावनाओं तक का त्याग करना पड़ता है।

जैन मुनियों का जीवन बेहद कठोर माना जाता है। वे दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं। दातून-मंजन जैसी चीजें छोड़ देते हैं। बिस्तर, तकिया—यह सब भी त्याग देते हैं और जमीन पर सोते हैं। मुनि के पास केवल तीन वस्तुएँ रहती हैं: कमंडल, शास्त्र और पिच्छी—जिससे वे जीवों की रक्षा करने का ध्यान रखते हैं।

दीक्षा के दौरान आचार्य के सामने व्यक्ति प्रतिज्ञा लेता है कि वह जीवनभर धर्म के इन सिद्धांतों का पालन करेगा। यह प्रतिज्ञा केवल शब्दों की नहीं होती—यह पूरी जीवनशैली को बदल देने वाली प्रतिज्ञा होती है। जश जैसे युवा का इतनी कम उम्र में यह निर्णय लेना समाज के लिए एक गहरा संदेश भी है कि आत्मिक संतोष, भौतिक उपलब्धियों से कहीं बड़ा होता है।

अमीर घराने के चकाचौंध भरे माहौल में जीते हुए भी जश के मन में मोक्ष की ओर बढ़ने की तीव्र इच्छा जगना और फिर पूरा जीवन त्यागकर जैन मुनि बनने का संकल्प लेना—यह कहानी जितनी अद्भुत है, उतनी ही प्रेरणादायक भी है। यह उन दुर्लभ क्षणों में से एक है, जब दुनिया समझ पाती है कि असली समृद्धि बाहर की नहीं, भीतर की होती है।

बिहार में सत्ता की नई पटकथा: जदयू ने नीतीश को फिर सौंपा भरोसा, भाजपा ने सम्राट को बनाया नेता - बदलती राजनीति के बीच सरकार गठन की उलटी गिनती शुरू

(जीएनएस)। पटना। बिहार की राजनीति एक बार फिर नई करवट ले रही है। विधानसभा चुनाव के बाद शुरू हुई राजनीतिक हलचल अब निर्णायक मोड़ पर पहुँच चुकी है। राजधानी पटना के गलियारों में सुबह से लेकर देर शाम तक तेज हुई बैठकों, रणनीतियों और दावपेंचों की गूँज ने साफ कर दिया है कि राज्य में नई सरकार के गठन की तैयारियाँ अब आखिरी चरण में हैं। जदयू और भाजपा—दोनों दलों ने अपने-अपने नेता चुनकर सत्ता की नींव को औपचारिक रूप दे दिया है। इस नई व्यवस्था में जदयू ने एक बार फिर नीतीश कुमार को अपना नेतृत्व सौंपकर उनके अनुभव और स्थिर प्रशासनिक छवि पर भरोसा जताया है, जबकि भाजपा ने युवा ऊर्जा और राजनीतिक रणनीति के मिश्रण के रूप में सम्राट चौधरी को विधायक दल का नेता चुनकर स्पष्ट संकेत दिया है कि पार्टी इस बार अपनी भूमिका पहले से अधिक सशक्त बनाना चाहती है।

मुख्यमंत्री आवास के माहौल में आज सुबह से ही हलचल थी। जदयू के नव-निर्वाचित विधायक एक-एक कर वहाँ पहुँचते रहे, और अंततः सर्वसम्मति से नीतीश कुमार के नाम पर सहमति बनी। बैठक का माहौल एक तरह से यह बताता दिखा कि पार्टी अभी भी नीतीश को उस सूत्रधार की तरह देखती है जो बिहार को राजनीतिक अस्थिरता से दूर रखकर विकास के पथ पर आगे बढ़ा सकता है। कई नेताओं ने यह संकेत भी दिया कि नई सरकार आने वाले समय में कुछ नई प्राथमिकताओं और नीतियों पर ध्यान देगी, जिनका खाका अभी तैयार किया जा रहा है। नीतीश कुमार के निर्णयों और प्रशासनिक शैली को लेकर पार्टी की एकजुटता वहीं दिखाई पड़ी—जिसकी वजह से वे दो दशकों से बिहार की राजनीति में केंद्रीय भूमिका निभाते आए हैं। दूसरी तरफ, भाजपा का अटल सभागार सुबह 11:30 बजे से ही राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बना रहा। जैसे-जैसे 89 विधायकों की उपस्थिति पूरी होती गई, वैसे-वैसे माहौल गंभीर चर्चा और उत्साह का मिश्रण बनता गया। पारंपरिक स्वागत, पंजीकरण, सुरक्षा व्यवस्था—सबकुछ भाजपा की कार्यशैली के अनुरूप व्यवस्थित था। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल और प्रभारी विनोद तावड़े ने की, जिनकी मौजूदगी के साथ केंद्रीय नेतृत्व की उपस्थिति ने इस बात के संकेत दिए कि दिल्ली भी इस बार बिहार की राजनीति पर पूरी नजर बनाए हुए है। दो घंटे चली इस बैठक में सम्राट चौधरी को सर्वसम्मति से नेता चुना गया। यह चयन न केवल पार्टी की रणनीति को नया आयाम देता है बल्कि उन राजनीतिक समीकरणों को भी दर्शाता है जो नई सरकार की भूमिका, मंत्रालयों के वितरण और निर्णय प्रक्रियाओं को प्रभावित करेंगे। भाजपा जिस तरह सावधानी और मजबूती से कदम बढ़ा रही है, उससे स्पष्ट है कि वह सत्ता में अपनी हिस्सेदारी को और अधिक प्रभावी बनाना चाहती है।

दिन भर चले इन राजनीतिक घटनाक्रमों का चरम माना जा रहा है देर शाम होने वाली वह महत्वपूर्ण बैठक, जिसमें केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह भाजपा नेताओं के साथ चर्चा करेंगे। इस मुलाकात में मंत्रालयों के प्रारंभिक बंटवारे, शीर्ष पदों की संतुलित व्यवस्था और गठबंधन की रणनीति जैसे मुद्दों पर विस्तृत विचार-विमर्श होने की संभावना सबसे अधिक बताई जा रही है। राजनीतिक सूत्रों की मानें तो यह बैठक नई सरकार की दिशा और संरचना को लगभग अंतिम रूप दे सकती है। बिहार की राजनीति इस समय न केवल सत्ता परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, बल्कि वह एक नए नेतृत्व संतुलन, नए समीकरणों और नई प्राथमिकताओं की ओर भी बढ़ रही है। जनता की उम्मीदें और राजनीतिक दलों की रणनीतियाँ—दोनों इस समय अपने-अपने चरम पर हैं। आने वाले दिनों में जब मंत्रिमंडल का स्वरूप सामने आएगा, तब यह पूरी तस्वीर साफ होगी कि नीतीश और सम्राट की जोड़ी बिहार को किस नई दिशा में ले जाने वाली है।

फर्जी वर्दी, झूठी कहानियाँ और ठगी का जाल-ग्रेटर नोएडा में पकड़ा गया 'नकली रॉ अधिकारी'

(जीएनएस)। ग्रेटर नोएडा की शांत और आलीशान पैरामाउंट गोल्फ फॉरेस्ट सोसाइटी में पिछले कई महीनों से एक व्यक्ति बड़ी शान से रह रहा था। कभी वह खुद को रॉ का ऑपरेशन ऑफिसर बताता, तो कभी लोगों को सेना का मेजर बनकर प्रभावित करता। भारी-भरकम वर्दी, चमकते बैज, रौबदार आवाज़ और सरकारी पहचान-पत्रों का गठ्ठर—सब कुछ इतना असली लगता था कि कोई भी उसकी बातों पर शक नहीं करता। लेकिन मंगलवार की दोपहर यूपी एसटीएफ के अचानक छापे ने इस नकली दुनिया की पूरी चमक उतार दी। गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम सुमित कुमार है। उसके कमरे में छापा मारते ही पुलिस को फर्जीवाड़े का ऐसा भंडार मिला जिसने पूरे सिस्टम को चौंका दिया—फर्जी आईडी कार्डों का ढेर, पुलिस वेरिफिकेशन लेटर, बैंक पासबुक, क्रेडिट-डेबिट कार्ड, पैन और आधार कार्डों का जखीरा, साथ ही कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण। इतना ही नहीं, उसके टैब में दिल्ली ब्लास्ट से जुड़े वीडियो मिलने से जांच एजेंसियों की चिंता और बढ़ गई है।

इस पूरे खेल का सबसे चौंकाने वाला पहलू वह शादी है, जिसमें उसने फर्जी पहचान का इस्तेमाल किया। सुमित ने खुद को उच्च सुरक्षा एजेंसियों का अधिकारी बताकर एक महिला न्यायिक अधिकारी से शादी कर ली थी। अपने रुतबे और फर्जी दस्तावेजों के बूते वह आसानी से लोगों को भरोसे में ले लेता और फर्जी कंपनियों के नाम पर बड़े स्तर की ठगी की तैयारी कर रहा था।

सूचना मिलते ही एसटीएफ की टीम ने सोसाइटी में उसका ठिकाना ढूंढ निकाला। वह यहाँ 'मेजर अमित' नाम से रह रहा था। कमरे की तलाशी के दौरान मिले आईडी कार्ड को मौके पर मौजूद रॉ अधिकारियों ने तुरंत जांचा और पुष्टि की कि पहचान-पत्र पूरी तरह नकली है।

भारत–इजराइल संबंधों में नई ऊर्जा का दौर: व्यापार, तकनीक और नवाचार को जोड़ने निकले पीयूष गोयल

(जीएनएस)। नई दिल्ली से रवाना होने से पहले ही यह साफ हो गया था कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल का तीन दिवसीय इजराइल दौरा केवल औपचारिकता नहीं होगा—यह उन रिश्तों को नए स्वरूप देने का प्रयास है जिन पर आने वाले दशक में भारत की व्यापारिक दिशा और तकनीकी यात्रा निर्भर करेगी। 20 से 22 नवंबर तक चलने वाली यह यात्रा इजराइल के अर्थव्यवस्था एवं उद्योग मंत्री नीर बरकत के निमंत्रण पर हो रही है, लेकिन इसके केंद्र में दोनों देशों के बीच तीव्र गति से विकसित हो रहे रणनीतिक और आर्थिक संबंध हैं। गोयल के साथ इस यात्रा में भारत के उद्योग जगत की लगभग पूरी तस्वीर भी शामिल है—सीआईआई, फिक्की, एसोचैम, स्टार्ट-अप इंडिया और कई उभरते नवाचार क्षेत्रों के प्रतिनिधियों से मिलकर बना 60 सदस्यीय विशाल प्रतिनिधिमंडल। यह केवल एक राजनीतिक यात्रा नहीं रही, बल्कि व्यापार, तकनीक और निवेश के नए पुल तैयार करने का प्रयास बन चुकी है। तेल अवीव पहुंचते ही यह प्रतिनिधिमंडल इजराइल के प्रमुख उद्योग नेताओं, निवेशकों और तकनीकी संस्थानों से मिलने की तैयारी

में जुट जाएगा, जहां चर्चा का मूल विषय होगा—नवाचार को साझा करना, निवेश को बढ़ाना और व्यापार को अगले स्तर तक ले जाना।

भारत और इजराइल के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) लंबे समय से चर्चा में है। इस दौरे में उसकी प्रगति का गहन मूल्यांकन होने की संभावना राजनीतिक हलकों में पहले ही संकेत दे चुका है। भारत की तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और इजराइल की विश्व-स्तरीय तकनीकी क्षमता—खासकर रक्षा, साइबर सुरक्षा, जल प्रबंधन और कृषि तकनीकों में—एक साथ मिलकर एशिया-पश्चिम एशिया के बीच एक नई आर्थिक धुरी तैयार कर सकती है।

दौरे के दौरान गोयल इजराइल के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात करेंगे—यह केवल आर्थिक संवाद नहीं, बल्कि आगामी वर्षों के सहयोग ढांचे को तय करने की दिशा में उठाया गया कदम है। कृषि तकनीकों में इजराइल की महारत, पानी को पुनर्चक्रित करने की उसकी क्षमता और रेगिस्तानी क्षेत्रों में भी आधुनिक खेती को संभव बनाने का उसका अनुभव भारत के लिए अत्यंत मूल्यवान माना जाता है। इसी तरह भारत का विशाल बाजार, कौशल आधारित मानव संसाधन, बुनियादी ढांचे का तेजी से विस्तार और डिजिटल अर्थव्यवस्था विश्व में निवेशकों के लिए बड़े आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं।

यात्रा का एक महत्वपूर्ण पहलू दोनों देशों के स्टार्ट-अप इकोसिस्टम को जोड़ना है। इजराइल दुनिया में "स्टार्ट-अप नेशन" के नाम से जाना जाता है और भारत दुनिया के सबसे बड़े स्टार्ट-अप इकोसिस्टमों में शामिल है। जब दोनों देशों के युवा उद्यमी, अनुसंधानकर्ता और निवेशक साथ बैठते हैं तो संभावनाएँ केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहतीं—वे नई तकनीक, संयुक्त अनुसंधान और वैश्विक बाजारों में संयुक्त उपस्थिति का रास्ता खोलती हैं।

तेल अवीव में आयोजित भारत–इजराइल व्यापार मंच इस यात्रा का मुख्य आकर्षण बनेगा, जहां दोनों देशों के बड़े उद्योग संगठन सीधे संवाद करेंगे। यह मंच उन लंबित परियोजनाओं को भी गति दे सकता है जो अब तक कागज़ों में आगे बढ़ने का इंतज़ार कर रही थीं।

22 नवंबर को समाप्त होने वाले इस दौरे को भारत और इजराइल दोनों की नज़र से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एक तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में, जहां व्यापार युद्ध, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और भू-राजनीतिक तनाव लगातार बढ़ रहे हैं, ऐसे समय में यह यात्रा दोनों देशों के बीच स्थिर, मजबूत और भविष्य-उन्मुख साझेदारी का संकेत देती है।

एक्सेलसॉफ्ट के 500 करोड़ के आईपीओ ने खोला निवेश का नया दरवाज़ा: निवेशकों की निगाहें कंपनी की रिकवरी और भविष्य की रफ्तार पर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाज़ार में एक बार फिर उत्साह की लहर दौड़ती दिखाई दी जब एडटेक सेक्टर में सक्रिय एक्सेलसॉफ्ट टेक्नोलॉजीज लिमिटेड ने मंगलवार से अपना 500 करोड़ रुपये का बहुप्रतीक्षित इनिशियल पब्लिक ऑफर निवेशकों के लिए खोल दिया। वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में तकनीकी समाधानों पर काम कर रही यह कंपनी अब पूंजी बाज़ार का दरवाजा खटखटा रही है और उसके इस कदम को निवेशक एक नए अवसर के रूप में देख रहे हैं। आईपीओ 21 नवंबर तक खुला रहेगा और निवेशकों को आवेदन के लिए केवल तीन दिनों का मौका मिला है, जिससे बाजार में उत्सुकता और बढ़ गई है। कंपनी ने अपने शेयरों के लिए 114 से 120 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है। निवेश की शुरुआत 125 शेयरों के एक लॉट से होगी, जिसके लिए 14,874 रुपये खर्च करने होंगे। रिटेल निवेशक अधिकतम 13 लॉट तक बोली लगा सकते हैं, जिसकी कुल कीमत लगभग दो लाख रुपये के आसपास बैठेगी। पूरे आईपीओ में कुल 4.16 करोड़ से अधिक शेयर शामिल हैं, जिनमें 1.50 करोड़ शेयर नए जारी किए जाएंगे। इन्हीं के माध्यम से कंपनी 180 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रही है। बाकी 2.66 करोड़ शेयर ऑफर-फॉर-सेल

के तहत वे प्रमोटर और मौजूदा निवेशक बेचेंगे जो अपनी हिस्सेदारी का कुछ हिस्सा नकदी में बदलना चाहते हैं।

कहानी तभी दिलचस्प बनती है, जब कंपनी के पिछले कुछ वर्षों की वित्तीय यात्रा को देखा जाए। कभी घाटे से जूझ रही एक्सेलसॉफ्ट ने बेहद तेज़ी से वापसी करते हुए अब मुनाफे की राह पकड़ ली है। सेबी को सौंपी गई रिपोर्ट के अनुसार 2022-23 में कंपनी 22.41 करोड़ रुपये के भारी घाटे में थी। अगले ही वर्ष यह घाटा घटकर करीब आधा रह गया और कंपनी अब भी संघर्षरत जरूर थी, लेकिन डूब रही नाव को संभालने में सफल रही थी। इस लगातार सुधार के बाद 2024-25 में कंपनी ने एक मजबूत पलटवार करते हुए करीब 35 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज कर मैदान ही बदल दिया। निवेशकों की नज़र में यह बदलाव किसी कहानी की तरह है—जहाँ नायक मुश्किलों से घिरा था, पर धीरे-धीरे परिस्थितियों को पलटता गया।

राजस्व के आंकड़ों ने भी उसी कहानी को और मजबूती दी है। 2022-23 में कंपनी ने 197.97 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया। यह संख्या अगले वर्ष थोड़ी बढ़कर 200.70 करोड़ रुपये हुई। ऐसा लग रहा था कि कंपनी धीमी रफ्तार से आगे बढ़ रही है, लेकिन 2024-25 में राजस्व अचानक उछलकर 248.80 करोड़ रुपये पहुंच गया, जिसका अर्थ है कि कंपनी के डिजिटल समाधानों और एडटेक सेवाओं की मांग में अच्छा विस्तार हुआ। यही नहीं, नए वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में ही कंपनी 60.28 करोड़ रुपये का राजस्व कमा चुकी है, जिससे संकेत मिलता है कि वृद्धि की यह गति आगे भी जारी रह सकती है।

कर्ज के बोझ से भी कंपनी धीरे-धीरे खुद को मुक्त करती दिखी। 2022-23 में कंपनी पर 118 करोड़ रुपये से ज्यादा का कर्ज था, लेकिन दो वर्षों के अंदर यह घटकर सिर्फ 26.59 करोड़ रुपये रह गया। हालांकि 2025 की पहली तिमाही में यह फिर थोड़ा बढ़कर 37.82 करोड़ रुपये तक पहुंचा है, लेकिन विश्लेषकों का मानना है कि विकास की तेज़ रफ्तार में कर्ज का ऐसा उतार-चढ़ाव सामान्य माना जाता है और आईपीओ से मिलने वाली पूंजी इस दबाव को और कम कर सकती है।

रिज़र्व और सरप्लस के आंकड़े भी कंपनी की वित्तीय सेहत की कहानी कहते हैं। कभी 276 करोड़ रुपये का रिज़र्व रखने वाली कंपनी अगले वर्षों में 295 करोड़ के स्तर तक पहुंची, फिर कुछ कम होकर 269 करोड़ पर आई, लेकिन 2025 की पहली तिमाही में एक बार फिर उभरकर 274 करोड़ के करीब पहुंच गई। यह संकेत देता है कि कंपनी की बैलेंस शीट तनाव में नहीं है और दीर्घकालिक योजना स्थिर है।